राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

का

दृष्टिकोण

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

का दृष्टिकोण

संपादक : नरेन्द्र ठाकुर

विमर्श प्रकाशन
नई दिल्ली–110 055

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
का दृष्टिकोण

संपादक : नरेन्द्र ठाकुर

प्रकाशक :
विमर्श प्रकाशन
41 एमएम रोड, द्वितीय मंजिल, रानी झाँसी मार्ग,
झण्डेवाला, नई दिल्ली–110 055
ई–मेल : vimarashprakashan@gmail.com

© प्रकाशक

पंचम संस्करण :
जनवरी, 2023

मूल्य : ₹ 40

ISBN : 978-81-930892-2-4

मुद्रक : एम.के. प्रिंटर्स, दिल्ली–7
mk1857@gmail.com

विषय सूची

1.	प्रस्तावना	5
2.	RSS - एक परिचय	7
3.	संघ और महात्मा गाँधी	17
4.	बम्बई विधानसभा में प्रश्नोतर	25
5.	नारी गरिमा	26
6.	मुस्लिम बन्धुओं के बारे में संघ का दृष्टिकोण	29
7.	ईसाइयत के बारे में संघ का दृष्टिकोण	41
8.	स्वयंसेवक सक्रिय हैं ऐसे संगठन एवं उनके क्षेत्र	71

प्रस्तावना

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बारे में जानने की उत्सुकता समाज में लगातार बढ़ती दिख रही है। संघ का राष्ट्र जीवन में योगदान का अनुभव भी समाज अलग-अलग समय पर कर रहा है। परिणामतः सराहना के साथ-साथ संघ से समाज की अपेक्षाएँ भी बढ़ रही हैं। नए व्यक्ति, विशेष कर युवकों को, संघ के बारे में प्राथमिक जानकारी देने हेतु **'आर.एस.एस.-एक परिचय'** नाम से एक वीडियो बनाया गया। उसकी काफी सराहना भी हुई। उसी को लिखित रूप में देना चाहिए, ऐसी माँग आने पर यह पुस्तिका बन रही है।

संघ के विरोधियों ने संघ के खिलाफ अनेक बार झूठा प्रचार अभियान चलाया था। इसके बावजूद संघ का समाज में व्यवहार देखकर वह निष्प्रभावी साबित हुआ और संघ का समाज में स्वागत, स्वीकार्यता एवं समर्थन लगातार बढ़ता ही गया है। ऐसे कुछ विषयों के बारे में संघ की अधिकृत भूमिका की जानकारी परिशिष्ट के रूप में देने का प्रयास किया है।

- **महात्मा गाँधी जी की हत्या के बाद संघ की क्या प्रतिक्रिया थी?**
  उस समय के सरसंघचालक पूजनीय श्रीगुरुजी ने प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू, गृहमन्त्री श्री वल्लभभाई पटेल तथा महात्मा गाँधी जी के पुत्र श्री देवदास गाँधी जी को संवेदना व्यक्त करने के लिए तार भेजा और श्री जवाहर लाल नेहरू तथा श्री वल्लभभाई पटेल को लिखा पत्र इसमें समाविष्ट है।
- **क्या संघ पर लादा गया प्रतिबन्ध सशर्त उठाया गया था?**

इस सम्बन्ध में मुम्बई विधानसभा में पूछे गए प्रश्न का अधिकृत उत्तर इसमें है।

- *संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा ने 2008 में महिलाओं के बारे में अपनी दृष्टि एवं भूमिका क्या हो इस विषय पर एक प्रस्ताव पारित किया था। यह भी इस पुस्तक में है।*
- **मुसलमानों के बारे में संघ क्या सोचता है?** *पूजनीय श्रीगुरुजी द्वारा सुप्रसिद्ध पत्रकार सैफुद्दीन जिलानी को 1972 में दिया गया साक्षात्कार इसमें समाविष्ट है।*
- **ईसाइयत एवं ईसाईयों के बारे में संघ क्या सोचता है?** *संघ के ज्येष्ठ अधिकारी एवं इतिहास के प्राध्यापक स्वर्गीय डॉ. श्रीपति शास्त्री का पूना में ईसाई मिशनरियों के बीच 1983 में एक भाषण हुआ, उसका यहाँ समावेश है।*
- *संघ के स्वयंसेवक राष्ट्र का एक विचार लेकर समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक संगठनों एवं गतिविधियों के माध्यम से सक्रिय हैं। उनकी सूची परिशिष्ट में दी है।*

संघ को जानने के लिए सीधा संघ में आकर ही देखना चाहिए, ऐसा आवाह्न वर्तमान सरसंघचालक जी बार-बार करते हैं। उसका अपना औचित्य तो है ही।

सुधी पाठकों को यह प्रयास पसन्द आयेगा, ऐसा विश्वास है।

– **प्रकाशक**

RSS – एक परिचय

1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य प्रारम्भ हुआ तथा आज भारतवर्ष के प्रत्येक राज्य एवं प्रत्येक जिले में संघ अपनी 57,000 से अधिक शाखाओं के माध्यम से सामाजिक कार्य कर रहा है। संघ के स्वयंसेवक समाज में 1.50 लाख सेवा कार्य कर रहे हैं। उपेक्षा, उपहास, विरोध तथा अवरोध को मात देते हुए संघ कार्य निरंतर बढ़ रहा है।

आज समाज में ***RSS*** *यानी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विषय में जानने की उत्सुकता बढ़ती हुई दिख रही है। जनमानस में संघ को लेकर कई प्रकार की जिज्ञासा है- जैसे कि आर.एस.एस. क्या है, इस संगठन का उद्देश्य क्या है, क्या यह एक सामाजिक संगठन है? अथवा यह एक राजनीतिक संगठन है। ऐसे ही कुछ प्रश्नों के उत्तर दे रहे हैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख डॉ. मनमोहन वैद्य जी –*

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ क्या है?

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक देशव्यापी सामाजिक, सांस्कृतिक संगठन है। देश भर में सभी राज्यों के सभी जिलों में 57 हजार से अधिक शाखाओं के माध्यम से संघ का कार्य चल रहा है। हर समाज में देशभक्त, अनुशासित, चरित्रवान और निःस्वार्थ भाव से काम करने वाले लोगों की आवश्यकता रहती है। संघ ऐसे लोगों को तैयार करने का, उनको संगठित करने का काम करता है। संघ समाज में एक संगठन ना बनकर सम्पूर्ण समाज को ही संगठित करने का प्रयास करता है।

संघ का उद्देश्य क्या है?

संघ का उद्देश्य अपने इस भारत को दुनिया का एक सर्वश्रेष्ठ देश बनाना है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में हमारा देश सर्वश्रेष्ठ हो। आर्थिक दृष्टि से वह स्वावलंबी और संपन्न हो। भारत ने कभी किसी पर आक्रमण नहीं किया है, लेकिन अगर भारत पर युद्ध लादा जाए तो युद्ध में भारत हमेशा अजेय हो। इसके साथ-साथ भारत केवल एक देश नहीं है। भारत का जीवन का एक प्राचीन विचार है, एक चिंतन है। भारत की एक जीवन दृष्टि है। यह जीवन दृष्टि एकात्म और सर्वांगीण है। यह जीवन दृष्टि भारत की पहचान है। यह जीवन दृष्टि भारत के राष्ट्र जीवन के हर क्षेत्र में प्रकट हो, ऐसी समाज रचना हम चाहते हैं। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि आध्यात्मिकता ही भारत की आत्मा है। भारत का प्राण है। यह भारत की आध्यात्मिकता यहाँ के समाज जीवन के प्रत्येक अंग में प्रकट हो, ऐसा एक सर्वांगीण उन्नत समाज हम निर्माण करना चाहते हैं।

यह लक्ष्य संघ कैसे प्राप्त करेगा?

किसी भी देश की श्रेष्ठता, उसका समाज कैसा है, उस पर निर्भर करती है। समाज अगर आपस में बंटा है, स्वार्थी है, भ्रष्ट है, काम करने वाला नहीं है तो देश कभी आगे नहीं बढ़ेगा। समाज में निःस्वार्थ भाव से काम करने वाले, चरित्रवान, परस्पर स्नेह करने वाले, अनुशासित, उद्यमी लोग रहेंगे तो देश आगे बढ़ेगा। ऐसे समाज को निर्माण करने का काम संघ ने अपने हाथ में लिया है। व्यक्ति समाज के बारे में संवेदनशील और राष्ट्र के बारे में जाग्रत और सक्रिय हो, ऐसे व्यक्ति तैयार करने का और उन्हें संगठित करने का कार्य संघ करता है।

संघ का राजनीति से क्या सम्बन्ध है?

व्यक्ति निर्माण और समाज संगठन का जो कार्य संघ ने अपने हाथ में लिया है, वह राजसत्ता द्वारा संभव नहीं है। यह संघ का पहले से ही मानना है। इसीलिए राजनीति में पहले से सक्रिय ऐसे संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार जी ने राजनीति से अलग होकर संघ कार्य

आरंभ किया है। देशभक्त एवं सामाजिक सरोकार समाज में निर्माण करना और इसके माध्यम से संगठित लोकशक्ति के द्वारा राजसत्ता पर अंकुश रखने का काम कर सकते हैं। इसलिए जाग्रत, संगठित लोकशक्ति के द्वारा राजसत्ता पर अंकुश रहे और नैतिकता पर आधारित साफ-सुथरी राजनीति देश में चले, ऐसा संघ चाहता है।

भाजपा के साथ संघ का क्या रिश्ता है?

किसी भी देश में समाज अपनी सुविधा के लिए कुछ व्यवस्थाएँ खड़ी करता है। राजनीति या राजसत्ता भी उसमें से एक व्यवस्था है। संघ संपूर्ण समाज के लिए काम करता है। संघ के स्वयंसेवक एक राष्ट्रीय दृष्टिकोण लेकर समाज जीवन के विभिन्न अंगों में सक्रिय हैं। ऐसे करीब 35 संगठनों के माध्यम से संघ के स्वयंसेवक समाज में काम कर रहे हैं। राजनीति समाज का एक अंग होने के कारण स्वयंसेवक इस क्षेत्र में भी सक्रिय हैं। ये सारे संगठन स्वायत्त एवं स्वतन्त्र हैं। अपने कार्यक्रम, आर्थिक व्यवस्था, सदस्यता, निर्णय प्रक्रिया इन सब में ये स्वतन्त्र हैं। इन संगठनों में जुड़ने के लिए संघ का स्वयंसेवक होना अनिवार्य नहीं है। भारतीय जनता पार्टी का जो पूर्व का स्वरूप था भारतीय जनसंघ, उसके संस्थापक डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी संघ के स्वयंसेवक नहीं थे। ऐसे संगठनों में सक्रिय सभी स्वयंसेवक बीच-बीच में एकत्र आते हैं। एक-दूसरे के अनुभव साँझा करते हैं। परस्पर परामर्श करते हैं, एक-दूसरे की बात को समझते हैं और आवश्यकता पड़ने पर सहयोग भी करते हैं। देशहित में काम करने वाले किसी भी संगठन या संस्था के साथ संघ इस तरह का परामर्श और सहयोग करता रहता है। संघ की देश के विकास की एक विशिष्ट कल्पना है, एक विचार है। उस विचार से जो दल सहमत होते हैं, उस दल के साथ स्वयंसेवकों की स्वाभाविक सहानुभूति और समर्थन जाता है। भाजपा संघ के इस विचार को साँझा करती है और इसीलिए संघ के स्वयंसेवकों का स्वाभाविक समर्थन भाजपा को मिलता है। संघ के इस विचार के साथ जो भी दल सहमत होगा, उस दल को स्वयंसेवकों का समर्थन मिलेगा। इसलिए संघ का जहाँ प्रभाव है वहाँ भाजपा को समर्थन मिलता हुआ दिखता है। परन्तु संघ किसी

एक दल के लिए नहीं, देश के लिए काम करता है।

संघ खुद को राजनीति से दूर बताता है, तो बीजेपी के विरोधी संघ पर आरोप क्यों करते हैं?

क्योंकि संघ की ताकत उनकी इच्छा के खिलाफ बढ़ रही है इसलिए। उन्होंने संघ को रोकने, समाप्त करने और बदनाम करने की खूब कोशिश की पर इसके बावजूद संघ का समर्थन बढ़ रहा है। संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार कहते थे कि– 'सबको साथ लेकर चलने का प्रयास होना चाहिए।' संघ के कार्यक्रम में हम सबको बुलाते हैं। केरल के कोल्लम में 2010 में संघ का बड़ा कार्यक्रम हुआ था। 92 हजार स्वयंसेवक पूर्ण गणवेश में आए थे। उसकी तैयारी में अस्थाई कार्यालय खोला था। उसके उद्घाटन के लिए कोल्लम के मेयर को संघ ने बुलाया था। मेयर आए थे, वह सीपीएम के थे। सीपीएम को प्रॉब्लम थी तो उन्होनें उन पर कार्रवाई की। तो उन्हें क्या दिक्कत है यह उनसे पूछिए। हम तो सबको साथ लेकर चलते हैं।

संघ केवल हिन्दुओं के संगठन की ही बात क्यों करता है? क्या वह एक धार्मिक संगठन है?

संघ में हिन्दू शब्द का प्रयोग उपासना, पंथ, मजहब या रिलिजन के नाते नहीं होता है। इसलिए संघ एक धार्मिक या रिलिजियस संगठन नहीं है। हिन्दू की एक जीवन दृष्टि है, एक view of life है और एक way of life है। इस अर्थ में संघ में हिन्दू का प्रयोग होता है। सर्वोच्च न्यायालय ने भी एक महत्त्वपूर्ण निर्णय में कहा है कि Hinduism is not a religion but a way of life. उदाहरणार्थ सत्य एक है। उसे बुलाने के नाम अनेक हो सकते हैं। उसे पाने के मार्ग भी अनेक हो सकते हैं। वे सभी समान हैं, यह मानना इस भारत की जीवन दृष्टि है। यह हिन्दू जीवन दृष्टि है। एक ही चैतन्य अनेक रूपों में अभिव्यक्त हुआ है। इसलिए सभी में एक ही चैतन्य विद्यमान है। इसलिए विविधता में एकता (Unity in Diversity), यह भारत की जीवन दृष्टि है। यह हिन्दू जीवन दृष्टि है। इस जीवन दृष्टि को मानने वाला, भारत के इतिहास को अपना मानने वाला, यहाँ जो जीवन मूल्य विकसित हुए हैं, उन

जीवन मूल्यों को अपने आचरण से समाज में प्रतिष्ठित करने वाला और इन जीवन मूल्यों की रक्षा हेतु त्याग और बलिदान करने वाले को अपना आदर्श मानने वाला हर व्यक्ति हिन्दू है, फिर उसका मजहब या उपासना पंथ चाहे जो हो।

क्या संघ में मुस्लिम और ईसाई को भी प्रवेश मिल सकता है?

भारत में रहने वाला ईसाई या मुस्लिम भारत के बाहर से नहीं आया है। वे सब यहीं के हैं। हमारे सबके पुरखे एक ही हैं। किसी कारण से मजहब बदलने से जीवन दृष्टि नहीं बदलती है। इसलिए उन सभी की जीवन दृष्टि भारत की यानी हिन्दू ही है। हिन्दू, इस नाते वे संघ में आ सकते हैं, आ रहे हैं और जिम्मेदारी लेकर काम भी कर रहे हैं। उनके साथ मजहब के आधार पर कोई भेदभाव या कोई स्पेशल ट्रीटमेंट उनको नहीं मिलता है। सभी के साथ हिन्दू, इस नाते वे सभी कार्यक्रमों में सहभागी होते हैं।

हिन्दू समाज में प्रचलित जातिगत विसंगतियों या छुआछूत के बारे में संघ की क्या धारणा है, क्या राय है?

संघ का मानना है कि **'हिन्दवाः सहोदराः सर्वे'** याने सभी हिन्दू एक ही माँ के पुत्र हैं। इसलिए सभी भाई-भाई हैं। कोई ऊँचा या कोई नीचा नहीं है। संघ का विचार भी ऐसा रहा है और संघ का आचरण भी ऐसा ही रहा है। पुणे के प्रसिद्ध वसंत व्याख्यान माला में, संघ के तृतीय सरसंघचालक पूज्य बालासाहेब देवरस ने अपने भाषण में कहा था कि यदि अस्पृश्यता गलत नहीं है तो दुनिया में कुछ भी गलत नहीं है। और इसको जड़मूल से उखाड़ कर फेंक देना चाहिए। (If untouchability is not wrong there is nothing wrong in the world. And it should go lock, stock and barrel). संघ सम्पूर्ण समाज का संगठन करने की बात करता है। तो समाज के सभी वर्ग के लोगों का संघ में आना अपेक्षित है। ऐसा संघ का प्रयास भी रहा है और ऐसे लोग संघ के आरम्भ से ही संघ में आ रहे हैं। 1934 में वर्धा के पास एक संघ शिविर में डॉ. हेडगेवार के समय ही, महात्मा गाँधी शिविर देखने आए थे। वहाँ पर समाज में जिनको

अस्पृश्य कहते हैं, ऐसे समाज के लोग भी सभी के साथ रहकर समान रूप से व्यवहार करते हैं, एक साथ भोजन करते हैं, यह देख कर वे बहुत प्रसन्न हुए थे। और यह प्रसन्नता उन्होंने डॉ. हेडगेवार जी को दूसरे दिन जताई भी थी।

क्या संघ में महिलाओं को प्रवेश है?

संघ में व्यक्ति निर्माण का जो कार्य शाखा के माध्यम से चलता है, उसमें केवल पुरुष आते हैं। महिलाओं के बीच में ऐसा ही कार्य राष्ट्र सेविका समिति के नाम से स्वतन्त्र रूप से चलता है। समिति की देश भर में सभी प्रान्तों में 2100 शाखाएँ चलती हैं। परस्पर सहयोग, समन्वय अवश्य रहता है। सामाजिक जागरण तथा प्रबोधन के काम में सब साथ मिलकर काम करते हैं।

युवकों को संघ में आने के लिए क्या संघ की गणवेश (Uniform) बाधा रूप नहीं है? क्या इसको बदलने पर कभी विचार किया है?

संघ का गणवेश समय-समय पर बदलता रहा है और आवश्यकता पड़ने पर और भी बदल सकता है। परन्तु संघ में आने का आकर्षण गणवेश कभी नहीं रहा है। संघ से जुड़ने का मुख्य आकर्षण रहा है भारत भक्ति या देशभक्ति। अपने समाज की वर्तमान स्थिति के बारे में मन में वेदना। इसमें परिवर्तन लाने का संकल्प और इस हेतु प्रेरणा, यही संघ के साथ वर्षों तक व्यक्ति को जोड़े रखता है। दूसरा आकर्षण है यहाँ पर मिलने वाला अकृत्रिम स्नेह, निःस्वार्थ भाव से मिलने वाली सम्बन्धों की ऊष्मा (Warmth of relationships), और तीसरा महत्त्व का आकर्षण है यहाँ पर एकदम नजदीक दिखने वाले, जिनसे हम खेल सकते हैं, बात कर सकते हैं, जिन्हें परख सकते हैं ऐसे आदर्श जीने वाले लोग (Role Models), और एक महत्त्व की बात है, वह यानी संघ की शाखा में हर रोज आने के लिए गणवेश पहनना अनिवार्य नहीं है। वहाँ खेल या शारीरिक कार्यक्रम अधिक होते हैं। ऐसे कार्यक्रम हेतु कोई समुचित वेश पहनकर कोई भी आ सकता है। बड़े शिविर या विशेष कार्यक्रमों में ही गणवेश पहनना

पड़ता है। दैनिक शाखा में आने के लिए ऐसे शिविरादि कार्यक्रमों में सहभागी होना अनिवार्य नहीं है। इसलिए संघ के साथ जुड़ने के लिए गणवेश बाधा है ऐसा नहीं लगता है।

शाखा क्या है? शाखा में क्या होता है?

जिन राष्ट्रीय एवं सामाजिक गुणों का हम निर्माण करना चाहते हैं, वह निर्माण करने की प्रयोगभूमि (Laboratory) यानी शाखा है। शाखा पर लोग हर रोज एकत्र आकर कुछ कार्यक्रम करते हैं। कुछ सामूहिक गुणों की उपासना करना तथा कुछ गुणों की सामूहिक उपासना करना। (To inculcate some collective qualities and to inculcate some qualities collectively), इसका कार्यक्रम(Programme) यानी शाखा है। शाखा में शारीरिक कार्यक्रम, खेल और देशभक्ति का भाव जगाने वाले गीत, चर्चा आदि कार्यक्रम होते हैं। ऐसे दैनिक एकत्रीकरण (Daily gathering centre) केंद्र यानी शाखा है।

हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा क्या है?

भारतीय परम्परा में राष्ट्र शब्द का अर्थ पश्चिम की नेशन-स्टेट अवधारणा से भिन्न है। यहाँ पर राष्ट्र की कल्पना राज्याधारित नहीं है बल्कि साँस्कृतिक है। अनेक वर्षों के चिंतन के आधार पर यहाँ एक जीवन दृष्टि (View of life) विकसित हुई है, उसके आधार पर यहाँ एक जीवन पद्धति (Way of life) विकसित हुई है। भारत के गाँव में रहने वाला, शहर में रहने वाला, रेगिस्तान में रहने वाला, पहाड़ों पर रहने वाला, पढ़ा-अनपढ़, गरीब-अमीर सभी को यह अपनी लगती है। इसलिए इन सबको जोड़ने वाली कड़ी यह जीवन दृष्टि है, संस्कृति है। इस अर्थ में यह जीवन दृष्टि, संस्कृति इस समाज की पहचान है। समाज ही राष्ट्र होता है। (People are the Nation). इसलिए यहाँ की जीवन दृष्टि को अपना मानने वाला, इस जीवन दृष्टि को अपने जीवन में उतारने वाला, जो यहाँ का पुत्रवत समाज है, उसका 'हिन्दू' यह केवल नाम ही नहीं है तो 'हिन्दू' यह उसकी पहचान भी बनी है। इस जीवन दृष्टि का आधार आध्यात्मिक है। इस आध्यात्मिकता पर आधारित जीवन दृष्टि को दुनिया में लोग 'हिन्दू'

इस नाते पहचानते हैं। इसलिए यह इस समाज की पहचान है, इसलिए यह हिन्दू राष्ट्र है। यह जीवन दृष्टि समाज जीवन के हर क्षेत्र में प्रस्फुटित हो, समाज की हर व्यवस्था में यह जीवन दृष्टि दिखे, यह इसके पीछे की कल्पना है। मजहब या उपासना पंथ के कारण किसी प्रकार भेदभाव नहीं करना यही वास्तव में हिन्दू जीवन दृष्टि है। इसलिए हिन्दू राष्ट्र, यह संकल्पना किसी भी मजहब या सम्प्रदाय के खिलाफ नहीं है। सभी को साथ लेकर एक निश्चित दिशा में जीवन विकसित करने का नाम हिन्दू राष्ट्र है।

आज के वैश्वीकरण (Globalisation) के जमाने में ज्यादातर लोग अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में पढ़ते हैं। क्या वे भी संघ से जुड़ रहे हैं?

अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने वाले या महानगरों में रहने वाले युवक देशभक्त नहीं होते हैं या उनमें सामाजिक संवेदना नहीं होती है, ऐसा मानना सही नहीं है। आज के युवकों में देशभक्ति का भाव है और समाज के लिए कुछ करने की तमन्ना भी है। इसके लिए संघ में अनुकूल वातावरण मिलता है। इसलिए वे संघ के साथ बड़ी मात्रा में जुड़ रहे हैं, ऐसा हमारा अनुभव है। हमने 2012 में संघ की वेबसाईट पर ऑनलाइन 'जॉइन आरएसएस' प्रावधान शुरू किया था। इसके जरिए 2012 में इस माध्यम से प्रतिमाह 1000 युवक जुड़ने के लिए अपनी उत्सुकता बताते थे। इस संख्या में 2013 में 2500 प्रतिमाह, 2014 और 2015 में 7000 प्रतिमाह और 2016 में 10,000 प्रतिमाह, ऐसी लगातार वृद्धि हो रही है। संघ के साथ परिचय होने के बाद संघ की प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने हेतु 7 दिन के निवासी वर्ग लगते हैं। इन वर्गों में 14 से 40 इस आयु के 1 लाख 12 हजार युवक गत वर्ष सहभागी हुए थे। इसका अर्थ है कि इस संख्या से छः गुना यानी 6 लाख 72 हजार युवक गत वर्ष प्रत्यक्ष संघ के सम्पर्क में आए हैं। इन शिविरों में अपना शुल्क देकर 7 दिन वहीं रहना पड़ता है। फिर भी इसमें सहभागी होने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

आज के तरुणों में अपनी साँस्कृतिक पहचान के बारे में जागृति

और समाज के लिए कुछ करने की संवेदना बढ़ रही है और इसके लिए संघ में अनुकूल और प्रोत्साहक वातावरण एवं अवसर मिलता है। इसलिए संघ के साथ युवक बड़ी संख्या में जुड़ रहे हैं।

इसकी क्या वजह लगती है, क्या केन्द्र में मोदी सरकार एक वजह है?

पढ़ा लिखा वर्ग दो वजहों से आ रहा है। उन्हें ग्लोबल एक्सपोजर मिला है तो उनके सामने अपनी कल्चर आइडेंटिटी के बारे में सवाल आते हैं, जिसका जवाब वह जानना चाहते हैं। वह अपनी कल्चर आइडेंटिटी के बारे में जानना और उस पर गर्व महसूस करना चाहते हैं। उन्हें लगता है कि यह जानकारी संघ से ही मिल सकती है। दूसरी वजह यह है कि जो लोग समाज के लिए कुछ करना चाहते हैं, पर अकेले करना संभव नहीं, तो वह संघ के साथ आकर यह काम करना चाहते हैं। जॉइन आरएसएस के जरिए जो लोग आ रहे हैं, उसमें 10 में से 5 लोग कल्चर आइडेंटिटी और 4 लोग सेवा के लिए आ रहे हैं। 10 में से एक की अलग-अलग वजहें हैं। पिछले कई सालों से हमारी सबसे ज्यादा शाखाएँ केरल में हैं, लेकिन वहाँ तो बीजेपी की सरकार नहीं है। तो संघ से जुड़ने और सरकार होने का कोई सम्बन्ध नहीं है।

आज के वैश्वीकरण (Globalisation) के युग में संघ की स्वदेशी की बात कितनी उचित है?

स्वदेशी और स्वावलंबन हर देश के लिए हर समय आवश्यक है। स्वदेशी का अर्थ दुनिया से व्यापार सम्बन्ध नहीं रखना, यह नहीं है। भारत का दुनिया के साथ प्राचीन काल से ही व्यापार सम्बन्ध रहा है। परस्पर पूरकता के आधार पर परस्पर सहमति से दुनिया के देशों के साथ व्यापार सम्बन्ध बनने चाहिए। आज दुनिया का हर देश अन्य देश के साथ व्यापार सम्बन्ध बनाते समय अपने स्वावलंबन पर भी बल दे रहा है। यही स्वदेशी है।

क्या भारत के बाहर अन्य देशों में संघ कार्य चलता है?

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का काम केवल भारत में चलता है।

लेकिन संघ के स्वयंसेवक जो अपने व्यवसाय या उद्योग हेतु भारत के बाहर गए हैं, वे वहाँ हिन्दू समाज के संगठन का कार्य हिन्दू स्वयंसेवक संघ (HSS) के नाम से कर रहे हैं। 40 देशों में यह कार्य चल रहा है। वहाँ के सभी हिन्दुओं को एकत्रित करना, नयी पीढ़ी को अपनी गौरवपूर्ण साँस्कृतिक धरोहर सौंपने की व्यवस्था करना और जिस देश में वे रहते हैं वहाँ के समाज के लिए सेवा कार्य करना, यह कार्य हिन्दू स्वयंसेवक संघ के माध्यम से स्वयंसेवक भारत के बाहर कर रहे हैं।

●●●

संघ और महात्मा गाँधी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एकत्रीकरण में महात्मा गाँधी

पूज्य महात्मा गाँधी जी विभाजन के बाद कुछ समय दिल्ली की हरिजन कॉलोनी में एक कुटिया में रहे। जिस मैदान में प्रतिदिन संघ की शाखा लगती थी, वहीं शाम को गाँधी जी की प्रार्थना सभा होती थी। उन दिनों दिल्ली में दंगे हो रहे थे। कर्फ्यू लगा हुआ था, रात को मूसलाधार बारिश हुई थी। गाँधी जी ने 16 सितम्बर, 1947 की सुबह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों से मिलने की इच्छा व्यक्त की। कर्फ्यू में ढील के समय, मण्डल स्तर से ऊपर के कार्यकर्ताओं को एकत्र किया गया। उनको सम्बोधित करते हुए गाँधी जी ने कहा –

बरसों पहले मैं वर्धा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक शिविर में गया था। उस समय इसके संस्थापक श्री हेडगेवार जीवित थे। स्व. श्री जमनालाल बजाज मुझे शिविर में ले गये थे और वहाँ मैं उन लोगों का कड़ा अनुशासन, सादगी और छुआछूत की पूर्ण समाप्ति देखकर अत्यन्त प्रभावित हुआ था। तब से संघ काफी बढ़ गया है। मैं तो हमेशा से यह मानता आया हूँ कि जो भी संस्था सेवा और आत्म-त्याग के आदर्श से प्रेरित है, उसकी ताकत बढ़ती ही है। लेकिन सच्चे रूप में उपयोगी होने के लिए त्यागभाव के साथ ध्येय की पवित्रता और सच्चे ज्ञान का संयोजन आवश्यक है। ऐसा त्याग, जिसमें इन दो चीजों का अभाव हो, समाज के लिए अनर्थकारी सिद्ध हुआ है।

शुरू में जो प्रार्थना गाई गई उसमें भारत माता, हिन्दू संस्कृति और हिन्दू धर्म की प्रशस्ति है। मैं यह दावा करता हूँ कि मैं सनातनी हिन्दू हूँ। मैं 'सनातन' का मूल अर्थ लेता हूँ। हिन्दू शब्द का सही-सही मूल क्या है। यह कोई नहीं जानता। यह नाम हमें दूसरों ने दिया और हमने

उसे अपने स्वभाव के अनुसार अपना लिया। हिन्दू धर्म ने दुनिया के सभी धर्मों की अच्छी बातें अपना ली हैं और इसलिए इस अर्थ में यह कोई वर्जनशील धर्म नहीं है। अतः इसका इस्लाम धर्म या उसके अनुयायियों के साथ ऐसा कोई झगड़ा नहीं हो सकता, जैसा कि आज दुर्भाग्यवश हो रहा है। जब से हिन्दू धर्म में अस्पृश्यता का जहर फैला, तब से इसका पतन आरम्भ हुआ। एक चीज निश्चित है और मैं यह बात जोर से कहता आया हूँ, यानी यदि अस्पृश्यता बनी रही तो हिन्दू धर्म मिट जाएगा। उसी तरह अगर हिन्दू यह समझें कि हिन्दुस्तान में हिन्दुओं के सिवाय अन्य किसी के लिए कोई जगह नहीं है और यदि गैर-हिन्दू, खासकर मुसलमान, यहाँ रहना चाहते हैं तो उन्हें हिन्दुओं का गुलाम बनकर रहना होगा, तो वे हिन्दू धर्म का नाश करेंगे और इसी तरह यदि पाकिस्तान यह माने कि वहाँ सिर्फ मुसलमानों के लिए ही जगह है और गैर-मुसलमानों को वहाँ गुलाम बनकर रहना होगा तो इससे हिन्दुस्तान में इस्लाम का नामोनिशान मिट जाएगा।

यह एक दुर्भाग्यपूर्ण सच्चाई है कि भारत के दो टुकड़े हो चुके हैं। अगर एक हिस्सा पागल बनकर शर्मनाक कार्य करे तो क्या दूसरा भी वैसा ही करे? बुराई का जवाब बुराई से देने में कोई लाभ नहीं है। धर्म ने हमें बुराई के बदले भलाई करना ही सिखाया है।

कुछ दिन पहले ही आपके गुरुजी से मेरी मुलाकात हुई थी। मैंने उन्हें बताया था कि कलकत्ता और दिल्ली में संघ के बारे में क्या-क्या शिकायतें मेरे पास आई थीं। गुरुजी ने मुझे आश्वासन दिया कि यद्यपि संघ के प्रत्येक सदस्य के उचित आचरण की जिम्मेदारी नहीं ले सकते, फिर भी संघ की नीति हिन्दुओं और हिन्दु धर्म की सेवा करना मात्र है और वह भी किसी दूसरे को नुकसान पहुँचा कर नहीं। संघ आक्रमण में विश्वास नहीं रखता। अहिंसा में उसका विश्वास नहीं है। वह आत्म-रक्षा का कौशल सिखाता है। प्रतिशोध लेना उसने कभी नहीं सिखाया।

आज हिन्दुस्तान की नाव बड़े तूफान में से गुजर रही है। जो नेता हुकूमत की बागडोर लेकर बैठे हैं, वे भारत के सर्वश्रेष्ठ नेता हैं। कुछ लोग उनसे असंतुष्ट हैं। मैं उनसे कहूँगा कि वे यदि इनसे अच्छे व्यक्ति ला सकते हैं तो लायें। तब मैं आज के नेताओं से सिफारिश करूँगा कि

वे हुकूमत की बागडोर उन्हें सौंप दें। आखिर सरदार तो बूढ़े हो गए हैं। जवाहरलाल जी उम्र के लिहाज से तो बूढ़े नहीं हैं, लेकिन काम के बोझ से बूढ़े-से दिखने लगे हैं। वे यथाशक्ति जनता की सेवा कर रहे हैं। लेकिन वे काम तो अपनी समझ के मुताबिक ही कर सकते हैं। अगर अधिकांश हिन्दू किसी खास दिशा में जाना चाहें-चाहे वह दिशा गलत ही क्यों न हो, तो उन्हें वैसा करने से कोई रोक नहीं सकता। लेकिन किसी आदमी को फिर वह अकेला ही क्यों न हो, उनके खिलाफ अपनी आवाज उठाने और उन्हें चेतावनी देने का अधिकार है। वही मैं आज कर रहा हूँ। मुझसे कहा जाता है कि आप मुसलमानों के दोस्त हैं और हिन्दुओं और सिखों के दुश्मन। यह सत्य है कि मैं मुसलमानों का दोस्त हूँ, जैसा कि मैं पारसियों और अन्य लोगों का हूँ। ऐसा तो मैं बारह वर्ष की उम्र से ही हूँ। लेकिन जो मुझे हिन्दुओं और सिखों का दुश्मन कहते हैं, वे मुझे पहचानते नहीं। मैं किसी का भी दुश्मन नहीं हो सकता, हिन्दुओं और सिखों का तो बिल्कुल ही नहीं।

अगर पाकिस्तान बुराई ही करता रहा तो आखिर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में लड़ाई होनी ही है। अगर मेरी चले तो न तो मैं फौज रखूँ और न पुलिस। मगर ये सब हवाई बातें हैं। मैं शासन नहीं चलाता। पाकिस्तान वाले हिन्दुओं और सिखों को क्यों नहीं मनाते कि यहीं रहो, अपना घर न छोड़ो। वे उन्हें हर तरह की सुरक्षा क्यों नहीं देते। इसी तरह क्यों न आज भारतीय संघ एक-एक मुसलमान की सुरक्षा सुनिश्चित करे? दोनों आज पागल-जैसे हो गए हैं। इसका परिणाम तो बरबादी और तबाही ही होगी।

संघ एक सुसंगठित, अनुशासित संस्था है। उसकी शक्ति भारत के हित में या उसके खिलाफ प्रयोग की जा सकती है। संघ के खिलाफ जो आरोप लगाए जाते हैं, उनमें कोई सच्चाई है या नहीं, यह मैं नहीं जानता। यह संघ का काम है कि वह अपने सुसंगत कामों से इन आरोपों को झूठा साबित कर दे।

(प्रकाशन विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित 'सम्पूर्ण गाँधी वांग्मय' खण्ड 89, पृष्ठ सं. 215-217 से साभार)

तार सन्देश

30 जनवरी को महात्मा गाँधी के निधन के संदर्भ में श्री गुरुजी ने पं. नेहरू, सरदार पटेल तथा श्री देवदास गाँधी को सांत्वनापरक सन्देश तार से भेजे। (मूल अंग्रेजी)

30 जवनरी, 1948

प्राणघातक क्रूर हमले के फलस्वरूप एक महान विभूति की दु:खद हत्या का समाचार सुनकर मुझे बड़ा आघात लगा। वर्तमान कठिन परिस्थिति में इससे देश की अपरिमित हानि हुई है। अतुलनीय संगठक के तिरोधान से जो रिक्तता पैदा हुई है, उसे पूर्ण करने और जो गुरुतर भार कंधों पर आ पड़ा है, पूर्ण करने की सामर्थ्य भगवान हमें प्रदान करे।

मा. स. गोलवलकर

***

श्री गुरुजी ने भारत की सभी संघ-शाखाओं को महात्मा जी की स्मृति में शाखा के दैनिक कार्यक्रम बंद रखकर तेरह दिन शोक मनाने का आदेश 30 जनवरी को अंग्रेजी में भेजे अपने इस तार द्वारा दिया था-

30 जनवरी, 1948

'आदरणीय महात्मा जी की दु:खद मृत्यु के निमित्त शोक प्रकट करने के लिए तेरह दिनों तक शोक-पालन किया जाए तथा दैनिक कार्यक्रम स्थगित रखे जाएँ।'

माधव सदाशिव गोलवलकर

***

श्रीगुरुजी ने पं. नेहरू तथा सरदार पटेल को 31 जनवरी को निम्नलिखित पत्र लिखकर अपने अंतःकरण का दुःख प्रकट किया-

नागपुर, 31 जनवरी, 1948

मान्यवर पंडित जी,

कल चेन्नै में वह भयंकर वार्ता सुनी कि किसी अविचारी भ्रष्ट-हृदय व्यक्ति ने पूज्य महात्मा जी पर गोली चलाकर उस महापुरुष के आकस्मिक असामयिक निधन का निर्घृण कृत्य किया। यह निंद्य कृत्य संसार के सम्मुख अपने समाज पर कलंक लगाने वाला हुआ है। यदि किसी शत्रु राष्ट्र के व्यक्ति द्वारा यह कृष्ण-कृत्य होता, तो भी असमर्थनीय होता, क्योंकि पूज्य महात्मा जी का जीवन किसी समुदाय विशेष की सीमा के ऊपर उठकर मानव समाज के हितार्थ समर्पित था। फिर इसी देश के निवासी से यह अनपेक्षित दुराचार हुआ देख प्रत्येक राष्ट्रीय का हृदय असहनीय वेदनाओं से व्यथित हो उठे, तो कोई आश्चर्य नहीं। जब से मैंने यह समाचार पाया, अंतःकरण शून्य सा हो रहा है। निकट भविष्य की भीषणता देख इस श्रेष्ठ संयोजक के तिरोधान से हृदय चिंता से भर गया है। विविध प्रवृत्तियों को एक सूत्र में पिरोकर उन्हें सन्मार्गगामी बनाने वाले कुशल कर्णधार पर यह आघात एक व्यक्ति से नहीं, किन्तु संपूर्ण देश से द्रोहपूर्ण प्रतीत होता है। इस विद्रोही व्यक्ति के विषय में उचित व्यवहार आप आज के राज्य के सूत्रचालक करेंगे ही। यह व्यवहार कितना भी कठोर हो, तो भी घटित हानि की तुलना में वह सौम्य ही दिखेगा। इस बारे में कुछ कहना मेरा विषय नहीं है।

परन्तु अब अपनी सबकी परीक्षा है। युक्त भाव, रुचिर वाणी और राष्ट्रहितैक दृष्टि रखकर सब प्रवृत्तियों को एकत्रित कर इस कठिन समय में से राष्ट्र-नौका सुरक्षित आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी हम सब लोगों पर है। इसी वृत्ति से चलने वाले संगठन की ओर से भीषण आपत्ति के काल में मैं राष्ट्र के दुःख का अनुभव तीव्रता से करते हुए, उस दिवंगत पुण्यात्मा का स्मरण कर परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह हमें सच्ची चिरंजीवी एकात्मता निर्माण

करने की प्रेरणा तथा बुद्धि दे।

मातृभूमि की सेवा में सहयोगी।

मा. स. गोलवलकर

***

नागपुर, 31 जनवरी, 1948

मान्यवर सरदार जी,

कल चेन्नै में था, तब अखिल मानव समाज को हिलाने वाली दुर्घटना सुनी। इतनी दुष्ट, निंदनीय घटना संभवतः कभी नहीं हुई होगी। हृदय अतीव पीड़ा से व्यथित हो उठा है।

जिसने यह दुष्कृत्य किया, उसकी भर्त्सना के लिए योग्य शब्द मिलना कठिन है। इतनी अकारण दुष्टता की कल्पना भी नहीं हो सकती। पूर्ण जगत को दु:ख से नि:शब्द करने वाले को क्या कहें? परन्तु विविध प्रवृत्तियों को अपने सूत्र में पिरोकर एक मार्ग पर चलाने वाले उस पुण्यात्मा का स्मरण करते हुए हम सभी उस महान् कर्णधार के असामयिक स्वर्गवास से उत्पन्न जिम्मेदारी को संभालें और इस भीषण संकटकाल में सुचारू भावना, संयमित वाणी, स्नेहपूर्ण व्यवहार से शक्ति संपन्न हो उठें और स्थायी एकता से राष्ट्रजीवन भर दें। उस महापुरुष का यही सच्चा पुण्यस्मरण होगा। इस श्रद्धा से एकता के पथ पर चलने वाले संगठन की ओर से मैं परमकृपालु परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि वह इस राष्ट्र के सब व्यक्तियों का पथ-प्रदर्शन कर विशुद्ध राष्ट्रभक्ति निर्माण की सबको प्रेरणा दे।

मातृसेवा में सहयोगी

मा. स. गोलवलकर

***

1 फरवरी को महात्मा जी की दुर्भाग्यपूर्ण हत्या के संबंध में श्री गुरुजी ने प्रकाशित करने हेतु ऐसोसिएटेड प्रेस को एक वक्तव्य दिया। अत्यंत सात्विक विचार तथा भावना व्यक्त करने वाले श्री गुरुजी के इस वक्तव्य को अनेक समाचार-पत्रों ने दूषित पूर्वाग्रह के कारण उचित ढंग से प्रकाशित नहीं किया या अधूरा प्रकाशित किया। पूरा वक्तव्य इस प्रकार का था -

नागपुर, 1 फरवरी, 1948

वर्तमान युग के परम आदरणीय तथा लोकप्रिय विभूति की हत्या पराकोटि का पाशविक कृत्य है। ऐसे समय सार्वजनिक भाषण तथा वक्तव्य न देने की हमारी परम्परा से हटकर, यह समाचार सुनते ही मेरे मन में जो घृणातिरेक तथा दु:ख का उद्रेक हुआ, उसे प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। यह एक अतुलनीय भीषण त्रासदी है, क्योंकि इसका खलनायक इस देश का नागरिक तो है ही, वह हिन्दू भी है। देश के प्रत्येक सद्प्रवृत नागरिक को महात्मा जी की मृत्यु से अवर्णनीय दु:ख तो होगा ही, इससे भी बढ़कर यह देखकर लज्जा का भी अनुभव होगा कि विकृत मनोवृत्ति का हत्यारा अपने ही देश का नागरिक है।

आज अपने देश की परिस्थिति अत्यंत विकट है। इस समय उस एकता-निर्माता तथा शान्ति-प्रस्थापक महात्मा की नितांत आवश्यकता थी। ऐसे महापुरुष की हत्या कर डालना एक अक्षम्य राष्ट्रविरोधी कार्य है। देश की इस हानि से हमें दु:ख होता है, हमारा हृदय क्षुब्ध होता है और भविष्य के बारे में चिंता होती है। मुझे आशा है कि इस प्रकार की भीषण दु:खपूर्ण परिस्थिति में लोग कुछ पाठ सीखेंगे तथा प्रेम और सेवा का मार्ग अपनाएँगे। प्रेम और सेवा के सिद्धान्तों पर श्रद्धा होने से ही मैं अपने सभी स्वयंसेवक बन्धुओं को सबसे प्रेम से बर्ताव करने का आदेश देता हूँ। गैरसमझदारी से कोई सीखकर उत्तेजना से बोले या कोई अनावश्यक उन्माद दिखाए तो भी वह सब विश्व में अपने देश का गौरव बढ़ाने वाले महात्मा के प्रति देशवासियों के मन में प्रेम और आदर रहने से हो रहा है। इसे सभी स्वयंसेवक

बन्धु ध्यान रखें। उस पूजनीय दिवंगत आत्मा को हमारे कोटि–कोटि प्रणाम।

मा. स. गोलवलकर

***

आज अपने देश की परिस्थिति अत्यंत विकट है। इस समय उस एकता–निर्माता तथा शान्ति–प्रस्थापक महात्मा की नितांत आवश्यकता थी। ऐसे महापुरुष की हत्या कर डालना एक अक्षम्य राष्ट्रविरोधी कार्य है। देश की इस हानि से हमें दुःख होता है, हमारा हृदय क्षुब्ध होता है और भविष्य के बारे में चिंता होती है। मुझे आशा है कि इस प्रकार की भीषण दुःखपूर्ण परिस्थिति में लोग कुछ पाठ सीखेंगे तथा प्रेम और सेवा का मार्ग अपनाएँगे। प्रेम और सेवा के सिद्धान्तों पर श्रद्धा होने से ही मैं अपने सभी स्वयंसेवक बन्धुओं को सबसे प्रेम से बर्ताव करने का आदेश देता हूँ ।

– श्री गुरुजी

14 अक्टूबर, 1949 को बम्बई विधान सभा के एक सत्र के दौरान संघ पर प्रतिबन्ध हटाये जाने के सम्बन्ध में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर –

श्री लल्लूभाई माकनजी पटेल (सूरत डिस्ट्रिक्ट)

प्रश्न : माननीय गृह एवं राजस्व मन्त्री कृपया यह बताएँ कि...

1. क्या यह सत्य है कि संघ (आर.एस.एस.) पर से प्रतिबन्ध हटा लिया गया है?

2. यदि सत्य है तो कृपया प्रतिबन्ध हटाने के कारण बताइए?

3. क्या यह प्रतिबन्ध बिना शर्त हटाए गए हैं या फिर यह सशर्त हटाए गए हैं?

4. यदि प्रतिबन्ध सशर्त हटाये गए हैं तो कृपया उन शर्तों को बताएँ?

5. क्या संघ के नेतृत्व ने सरकार को कोई वचन दिया है?

6. यदि हाँ तो वह वचन क्या है?

उत्तर : श्री दिनकर राव (श्री मोरार जी देसाई के लिए उनकी अनुपस्थिति के कारण)

1. जी हाँ।

2. (संघ से) प्रतिबन्ध इसलिए हटाया गया, क्योंकि इसे जारी रखने का कोई औचित्य नहीं था।

3. यह (प्रतिबन्ध) बिना शर्त हटाया गया है।

4. लागू नहीं।

5. जी नहीं।

6. लागू नहीं।

●●●

नारी गरिमा

बढ़ते भौतिकतावाद तथा उपभोक्तावाद के चलते भारत में नारी के प्रति देखने के दृष्टिकोण में काफी क्षरण हुआ है, ऐसा नारी के प्रति होने वाले व्यवहार से ध्यान में आता है। इसलिए 2008 में रा. स्व. संघ की प्रतिनिधि सभा ने नारी की गरिमा को लेकर एक प्रस्ताव पारित किया था, जिसमें नारी के प्रति हमारा दृष्टिकोण एवं कर्तव्य क्या हो, इस पर विचार व्यक्त किए थे। यह प्रस्ताव यहाँ प्रस्तुत है –

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा इस तथ्य को रेखांकित करना चाहती है कि भारतीय जीवनमूल्यों एवं भारतीय परम्परा के अनुसार नारी और पुरुष को परस्पर पूरकता एवं सामंजस्य के संबंधों के आधार पर परिवार का सुसंचालन करते हुए राष्ट्रजीवन के विविध क्षेत्रों में अपनी–अपनी भूमिका का निर्वहन करना चाहिए। भारत का इतिहास व वाङ्मय नारी की महत्ता व गुणगान से भरा पड़ा है। विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद में 30 से अधिक महिला मन्त्र–दृष्टाओं का उल्लेख है तथा जीवन के सभी क्षेत्रों में उनकी सम्मानजनक सहभागिता के प्रचुर उल्लेख विद्यमान हैं। आगे भी यह धारा प्रवाहमान होती रही है। यह तो सच है कि महिला एवं पुरुष के बीच कुछ निसर्गप्रदत्त अन्तर होता है। किन्तु भारत की परम्परा ने महिला के प्रति किसी भी प्रकार के भेदभाव को मान्यता नहीं दी है, अपितु उसे सर्वदूर एवं सर्वत्र अत्यन्त श्रद्धा व सम्मान का स्थान दिया है। अतः यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि महिलाओं के प्रति किसी भी प्रकार का भेदभावपूर्ण व्यवहार न हो तथा निर्णय प्रक्रिया में सदैव उनकी भागीदारी बनी रहे।

भारत की परम्परा ने महिला के प्रति किसी भी प्रकार के भेदभाव को मान्यता नहीं दी है, अपितु उसे सर्वदूर एवं सर्वत्र अत्यन्त श्रद्धा व सम्मान का स्थान दिया है। अतः यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि महिलाओं के प्रति किसी भी प्रकार का भेदभावपूर्ण व्यवहार न हो तथा निर्णय प्रक्रिया में सदैव उनकी भागीदारी बनी रहे।

आगे चलकर विलासितापूर्ण जीवनशैली में से उत्पन्न वातावरण से जीवन में धीरे-धीरे स्खलन प्रारम्भ हुआ। विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा हमारी आस्थाओं-श्रद्धाओं पर चुन-चुन कर प्रहार प्रारम्भ हुए और हमारे विश्व-वंदित जीवनमूल्य तहस-नहस होने लगे। भौतिकता की चकाचौंध में हम पश्चिम के अन्धानुकरण-पथ पर चल पड़े, जहाँ नारी स्वातंत्र्य के नाम पर उच्छृंखलता ही मिली। वैश्वीकरण और उदारीकरण की आँधी में महिलाओं को सम्मान का पात्र नहीं, बल्कि भोग-वस्तु बनाने की होड़ मच गई। प्रतिनिधि सभा इस बात पर चिन्ता व्यक्त करती है कि विज्ञापनों, पत्र-पत्रिकाओं, टी.वी. समाचारों, टी.वी. धारावाहिकों एवं चलचित्रों में महिलाओं के भोंडे तथा अश्लीलतापूर्ण चित्रों एवं दृश्यों को प्रचारित-प्रसारित कर भारतीय समाज में नारी की गरिमा व सम्मान को शर्मनाक ढंग से ध्वस्त करने एवं इनके परिणामस्वरूप परिवार को तोड़ने के कुत्सित प्रयास चल रहे हैं।

अ.भा.प्र. सभा महिलाओं के प्रति बढ़ती जा रही अभद्रता और छेड़छाड़ से लेकर उनके यौन शोषण, उत्पीड़न तथा अन्य संगीन अपराधों को खेदजनक मानती है। यह त्रासदी ही है कि उन्हें स्त्री-भ्रूणहत्या और दहेज-हिंसा ही नहीं, अपितु यौन शोषण की यंत्रणा भी कार्यस्थान और सार्वजनिक स्थानों से लेकर अपने घरों के दायरों तक में झेलनी पड़ती है। प्रतिनिधि सभा माँग करती है कि सरकार महिलाओं की सुरक्षा, संरक्षण तथा सशक्तीकरण के साथ घरेलू हिंसा और सार्वजनिक व कार्यस्थलों पर होने वाले दुर्व्यवहार शोषण के खिलाफ बने कानूनों का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित

करे और विज्ञापनों, समाचार-पत्रों एवं इलैक्ट्रोनिक मीडिया के कार्यक्रमों में नारी की गरिमा बनाए रखने की दृष्टि से उपयुक्त आचार संहिता एवं कड़े कानून बनाए।

अ.भा.प्र. सभा महिलाओं के प्रति बढ़ती जा रही अभद्रता और छेड़छाड़ से लेकर उनके यौन शोषण, उत्पीड़न तथा अन्य संगीन अपराधों को खेदजनक मानती है। यह त्रासदी ही है कि उन्हें स्त्री-भ्रूणहत्या और दहेज-हिंसा ही नहीं, अपितु यौन शोषण की यंत्रणा भी कार्यस्थान और सार्वजनिक स्थानों से लेकर अपने घरों के दायरों तक में झेलनी पड़ती है।

प्रतिनिधि सभा यह भी गहराई से अनुभव करती है कि इस संस्कृति-विध्वंसक परिस्थिति में सार्थक परिवर्तन लाने हेतु समाज की मानसिकता को भी आमूलाग्र बदलना होगा। केवल सरकारी कानूनों के भरोसे बैठे रहना आत्मवंचना होगी। समाज को यह प्रामाणिकता से अनुभव करना होगा कि उसका निर्माण परिवार संस्था से होता है और परिवार की धुरी स्त्री होती है। अतः स्त्री को सुविज्ञ, सजग और सशक्त किए बिना विकसित समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। साथ ही महिलाओं के प्रति सम्मानजनक व्यवहार की दृष्टि से परिवार, शिक्षा, मीडिया एवं समाज की मनोभूमिका में परिवर्तन नितान्त आवश्यक है। अ.भा.प्र. सभा साधु-सन्तों और सामाजिक नेताओं से भी इस सन्दर्भ में अग्रणी भूमिका निभाने हेतु आवाह्न करती है।

●●●

मुस्लिम बन्धुओं के बारे में संघ का दृष्टिकोण

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का लक्ष्य सम्पूर्ण समाज को संगठित कर अपने हिन्दू जीवन दर्शन के प्रकाश में समाज की सर्वांगीण उन्नति करना है। रा.स्व.संघ का कार्य किसी भी मजहब विशेष के विरुद्ध नहीं है। परन्तु किसी भी प्रकार की राष्ट्र विरोधी गतिविधि का संघ हमेशा विरोध करता आया है। समाज के वामपंथी एवं तथाकथित सेकुलर लेखक, जो संघ के विरुद्ध लगातार झूठा और गलत प्रचार करते आए हैं, संघ को मुस्लिम एवं ईसाई विरोधी बताने का प्रयास करते हैं। मजहब के आधार पर मुस्लिम तथा ईसाइयों के साथ भेदभाव करने की संघ की नीति रही है, ऐसा गलत प्रचार ये लोग करते हैं और इसके समर्थन में श्रीगुरुजी द्वारा लिखित ''वी ऑर अवर नेशनहुड डिफाइन्ड'' नामक पुस्तक का संदर्भ वे देते हैं। वास्तव में, यह पुस्तक संघ का अधिकृत साहित्य नहीं है। जिस समय यह पुस्तक प्रकाशित हुई उस समय श्रीगुरुजी संघ के सरसंघचालक तो नहीं ही थे, वे संघ के पदाधिकारी भी नहीं थे। भारत में रहने वाले मुस्लिम बन्धुओं के बारे में संघ की सोच क्या है, यह श्रीगुरुजी ने प्रसिद्ध पत्रकार श्री सैफुद्दीन जिलानी को दी मुलाकात में स्पष्ट की है। यही संघ की अधिकृत भूमिका है। यह मुलाकात 1972 में प्रकाशित हुई थी। इस मुलाकात के तथ्य नीचे प्रस्तुत हैं।

जाने माने पत्रकार डॉ. सैफुद्दीन जिलानी के साथ 30 जनवरी, 1971 को श्रीगुरुजी से कोलकाता में हुआ वार्तालाप –

डॉ. जिलानी : *देश के समक्ष आज जो संकट मुँह बाये खड़े हैं, उन्हें देखते हुए हिन्दू-मुस्लिम समस्या का कोई निश्चित हल ढूँढना, क्या आपको प्रतीत नहीं होता?*

श्रीगुरुजी : देश का विचार करते समय मैं हिन्दू और मुसलमान इस रूप में विचार नहीं करता, परन्तु इस प्रश्न की ओर लोग इस दृष्टि से देखते हैं। आजकल सभी लोग राजनीतिक दृष्टिकोण से ही विचार करते दिखाई देते हैं। हर कोई राजनीतिक स्थिति का लाभ उठाकर व्यक्तिगत अथवा जातिगत स्वार्थ सिद्ध करने में लिप्त है। इस परिस्थिति पर मात करने का केवल एक ही उपाय है और वह है राजनीति की ओर देशहित और केवल देशहित की ही दृष्टि से देखना। उस स्थिति में वर्तमान सभी समस्याएँ देखते ही देखते हल हो जाएँगी।

हाल ही में मैं दिल्ली गया था। उस समय अनेक लोग मुझसे मिलने आए थे। उनमें भारतीय क्राँति दल, संगठन कांग्रेस आदि दलों के लोग भी थे। संघ को हमने प्रत्यक्ष राजनीति से अलग रखा है। परन्तु मेरे कुछ पुराने मित्र जनसंघ में होने के कारण कुछ मामलों में, मैं मध्यस्थता करूँ इस हेतु से वे मुझसे मिलने आए थे। उनसे मैंने एक सामान्य-सा प्रश्न पूछा, आप लोग हमेशा अपने दल का और आपके दल के हाथ में सत्ता किस तरह आए, इसी का विचार किया करते हैं। परन्तु दलीय निष्ठा व दलीय हितों का विचार करते समय क्या आप सम्पूर्ण देश के हितों का कभी विचार करते हैं? इस सामान्य से प्रश्न का 'हाँ' में उत्तर देने कोई सामने नहीं आया। समग्र देश के हितों का विचार सचमुच उनके सामने होता, तो वे वैसा साफ-साफ कह सकते थे, किन्तु उन्होंने नहीं कहा। इसका अर्थ स्पष्ट है कि कोई भी दल समग्र देश का विचार नहीं करता। मैं समग्र देश का विचार करता हूँ। इसलिए मैं हिन्दुओं के लिए कार्य करता हूँ। परन्तु कल यदि हिन्दू भी देश के हितों के विरुद्ध जाने लगें, तब उनमें मेरी कौन-सी रुचि रह जाएगी?

रही मुसलमानों की बात। मैं यह समझ सकता हूँ कि अन्य लोगों की तरह उनकी भी न्यायोचित माँगें पूरी की जानी चाहिए।

परन्तु जब चाहे, तब विभिन्न सहूलियतों और विशेषाधिकारों की माँगें करते रहना कतई न्यायोचित नहीं कहा जा सकता। मैंने सुना है कि प्रत्येक प्रदेश में एक छोटे पाकिस्तान की माँग उठाई गई है, जैसा कि प्रकाशित हुआ है। एक मुस्लिम संगठन के अध्यक्ष ने तो लाल किले पर अपना झंडा फहराने की योजना की बात कही है। उन महाशय ने अब तक इसका खंडन भी नहीं किया है। ऐसी बातों से समग्र देश का विचार करने वालों का संतप्त होना स्वाभाविक है।

उर्दू के आग्रह का विचार करें। पचास वर्षों के पूर्व तक विभिन्न प्रान्तों के मुसलमान अपने-अपने प्रान्तों की भाषाएँ बोला करते थे तथा उन्हीं भाषाओं में शिक्षा-ग्रहण किया करते थे। उन्हें कभी ऐसा नहीं लगा कि उनके धर्म की कोई अलग भाषा है।

उर्दू मुसलमानों की धर्म-भाषा नहीं है। मुगलों के समय में एक संकर भाषा के रूप में वह उत्पन्न हुई। इस्लाम के साथ उसका रत्ती-भर संबंध नहीं है। पवित्र कुरान अरबी में लिखा है। अत: मुसलमानों की अगर कोई धर्म-भाषा हो, तो वह अरबी ही होगी। ऐसा होते हुए भी आज उर्दू का इतना आग्रह क्यों? इसका कारण यह है कि इस भाषा के सहारे वे मुसलमानों को एक राजनीतिक शक्ति के रूप में संगठित करना चाहते हैं। यह संभावना ही नहीं तो एक निश्चित तथ्य है कि इस तरह की राजनीतिक शक्ति देशहित के विरुद्ध ही जाएगी।

कुछ मुसलमान कहते हैं कि उनका राष्ट्र-पुरुष रुस्तम है। सच पूछा जाए, तो मुसलमानों का रुस्तम से क्या संबंध? रुस्तम तो इस्लाम के उदय के पूर्व ही हुआ था। वह कैसे उनका राष्ट्र-पुरुष हो सकता है? और फिर, प्रभु रामचन्द्र जी क्यों नहीं हो सकते? मैं पूछता हूँ कि आप यह इतिहास स्वीकार क्यों नहीं करते?

पाकिस्तान ने पाणिनि की 5 हजारवीं जयंती मनाई। इसका कारण यह है कि जो हिस्सा पाकिस्तान के नाम से पहचाना जाता है, वहीं पाणिनी का जन्म हुआ था। यदि पाकिस्तान के लोग गर्व के साथ यह कह सकते हैं कि पाणिनी उनके पूर्वजों में से एक हैं, तो फिर भारत के मुसलमान (मैं उन्हें हिन्दू मुसलमान कहता हूँ)

पाणिनी, व्यास, वाल्मीकि, राम, कृष्ण आदि को अभिमानपूर्वक अपने महान पूर्वज क्यों नहीं मानते?

हिन्दुओं में ऐसे अनेक लोग हैं, जो राम, कृष्ण आदि को ईश्वर के अवतार नहीं मानते। फिर भी वे उन्हें महापुरुष मानते हैं, अनुकरणीय मानते हैं। इसलिए मुसलमान भी यदि उन्हें अवतारी पुरुष न मानें, तो कुछ नहीं बिगड़ने वाला, परन्तु क्या उन्हें राष्ट्र पुरुष नहीं माना जाना चाहिए?

हमारे धर्म और तत्वज्ञान की शिक्षा के अनुसार हिन्दू और मुसलमान समान ही हैं। ऐसी बात नहीं कि ईश्वरीय सत्य का साक्षात्कार केवल हिन्दू ही कर सकता है। अपने-अपने धर्म-मत के अनुसार कोई भी साक्षात्कार कर सकता है।

हमारे धर्म और तत्वज्ञान की शिक्षा के अनुसार हिन्दू और मुसलमान समान ही हैं। ऐसी बात नहीं कि ईश्वरीय सत्य का साक्षात्कार केवल हिन्दू ही कर सकता है। अपने-अपने धर्म-मत के अनुसार कोई भी साक्षात्कार कर सकता है।

श्रृंगेरी मठ के शंकराचार्य का ही उदाहरण लें। यह उदाहरण, वर्तमान शंकराचार्य के गुरु का है। एक अमेरिकी व्यक्ति उनके पास आया और उनसे प्रार्थना की कि उसे हिन्दू बना लिया जाए। इस पर शंकराचार्य जी ने उससे पूछा- 'वह हिन्दू क्यों बनना चाहता है?' उसने उत्तर दिया कि ईसाई धर्म से उसे शाँति प्राप्त नहीं हुई है। आध्यात्मिक तृष्णा भी अतृप्त ही है।

इस पर शंकराचार्य जी ने उससे कहा- 'क्या तुमने ईसाई धर्म का प्रामाणिकतापूर्वक पालन किया है? यदि तुम इस निष्कर्ष पर पहुँच चुके होंगे कि ईसाई धर्म का पालन करने के बाद भी तुम्हें शाँति नहीं मिली, तो मेरे पास अवश्य आओ।'

हमारा दृष्टिकोण इस तरह का है। हमारा धर्म, धर्म-परिवर्तन न कराने वाला धर्म है। धर्मांतरण तो प्राय: राजनीतिक अथवा अन्य हेतु से कराए जाते हैं। इस तरह का धर्म-परिवर्तन हमें स्वीकार नहीं है। हम

कहते हैं– 'यह सत्य है। तुम्हें जँचता हो तो स्वीकारो, अन्यथा छोड़ दो।'

दक्षिण की यात्रा के दौरान मदुरै में कुछ लोग मुझसे मिलने के लिए आए। मुस्लिम-समस्या पर वे मुझसे चर्चा कर मुसलमानों के विषय में मेरा दृष्टिकोण चाहते थे। मैंने उनसे कहा– 'आप लोग मुझसे मिलने आए, मुझे बड़ा आनन्द हुआ। हमें यह बात हमेशा ध्यान में रखनी होगी कि हम सबके पूर्वज एक ही हैं। हम सब उनके वंशज हैं। आप अपने-अपने धर्मों का प्रामाणिकता से पालन करें, परन्तु राष्ट्र के मामले में हम सबको एक रहना चाहिए। राष्ट्रहित के लिए बाधक सिद्ध होने वाले अधिकारों और सहूलियतों की माँग बन्द होनी चाहिए। हम हिन्दू हैं, इसलिए हम विशेष सहूलियतों या अधिकारों की कभी बात नहीं करते। ऐसी स्थिति में कुछ लोग यदि कहने लगें कि 'हमें अलग होना है', 'हमें अलग प्रदेश चाहिए' तो यह कतई सहन नहीं होगा।

ऐसी बात नहीं है कि यह प्रश्न केवल हिन्दू और मुसलमानों की बीच ही हो। यह समस्या तो हिन्दुओं के बीच भी है। जैसे हिन्दू समाज में जैन लोग हैं, तथाकथित अनुसूचित जातियाँ हैं। अनुसूचित जातियों में से कुछ लोगों ने डा. अम्बेडकर के अनुयायी बनकर बौद्ध धर्म ग्रहण किया। अब वे कहते हैं कि– 'हम अलग हैं'। अपने देश में अल्पसंख्यकों को कुछ विशेष राजनीतिक अधिकार प्राप्त हैं। इसलिए प्रत्येक गुट स्वयं को अल्पसंख्यक बताने का प्रयास कर रहा है तथा उसके आधार पर कुछ विशेष अधिकार और सहूलियतें माँग रहा है। इससे अपने देश के अनेक टुकड़े हो जाएँगे और सर्वनाश होगा। हम उसी दिशा में बढ़ रहे हैं। कुछ जैन-मुनि मुझसे मिले। उन्होंने कहा, 'हम हिन्दू नहीं हैं। अगली जनगणना में हम स्वयं को जैन के नाम से दर्ज कराएँगे।' मैंने कहा, "आप आत्मघाती सपने देख रहे हो। अलगाव का अर्थ है देश का विभाजन और विभाजन का परिणाम होगा आत्मघात।"

जब लोग प्रत्येक बात का विचार राजनीतिक स्वार्थ की दृष्टि से करने लगते हैं, तब अनेक भीषण समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। किन्तु इस स्वार्थ को अलग रखते ही अपना देश एक संघ बन सकता

है। फिर हम सम्पूर्ण विश्व की चुनौती का सामना कर सकते हैं।

डॉ. जिलानी : *भौतिकतावाद और विशेषत: साम्यवाद से अपने देश के लिए खतरा पैदा हो गया है। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास रखते हैं। क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि दोनों मिलकर इस संकट का मुकाबला कर सकते हैं?*

श्रीगुरुजी : यही प्रश्न कश्मीर के सज्जन ने मुझसे किया था। उनका नाम संभवत: नाजिर अली है। अलीगढ़ में मेरे एक मित्र अधिवक्ता श्री मिश्रीलाल के निवास-स्थान पर वे मिले थे। उन्होंने कहा, नास्तिकता और साम्यवाद हम सभी पर अतिक्रमण हेतु प्रयत्नशील हैं। अत: ईश्वर पर विश्वास रखने वाले हम सभी को चाहिए कि हम सामूहिक रूप से इस खतरे का मुकाबला करें।

मैंने कहा, ''मैं आपसे सहमत हूँ। परन्तु कठिनाई यह है कि हम सबने मानों ईश्वर की प्रतिमा के टुकड़े-टुकड़े कर डाले हैं और हरेक ने एक-एक टुकड़ा उठा लिया है। आप ईश्वर की ओर अलग दृष्टि से देखते हैं, ईसाई अलग दृष्टि से देखते हैं। बौद्ध लोग तो कहते हैं कि ईश्वर तो है ही नहीं, जो कुछ है वह निर्वाण ही है। जैन लोग कहते हैं कि सब कुछ शून्याकार ही है। हममें से अनेक लोग राम, कृष्ण, शिव आदि के रूप में ईश्वर की उपासना करते हैं। इन सबको आप यह किस तरह कह सकेंगे कि एक ही सर्वमान्य ईश्वर को माना जाए। इसके लिए आपके पास क्या कोई उपाय है?'' मेरी यह धारणा थी कि सूफी ईश्वरवादी और विचारशील हुआ करते हैं, परन्तु उस सूफी सज्जन ने जो उत्तर दिया, उसे सुनकर आप आश्चर्यचकित हो जाएँगे। उन्होंने कहा, ''तो फिर आप सब लोग इस्लाम ही क्यों नहीं स्वीकार कर लेते?''

मैंने कहा, ''फिर तो कुछ लोग कहेंगे कि ईसाई क्यों नहीं बन जाते? मेरे धर्म के प्रति मेरी निष्ठा है, इसलिए मैं यदि आपसे कहूँ कि आप हिन्दू क्यों नहीं बन जाते, तब? यानी समस्या वैसी की वैसी ही रह गई। वह कभी हल नहीं होगी।''

इस पर उन्होंने मुझसे पूछा कि आपकी क्या राय है? मैंने बताया कि सभी अपने-अपने धर्म का पालन करें। एक ऐसा

सर्वसारभूत तत्वज्ञान है, जो केवल हिन्दुओं का या केवल मुसलमानों का ही हो, ऐसी बात नहीं है। इस तत्वज्ञान को आप अद्वैत कहें या और कुछ। यह तत्वज्ञान कहता है कि एक एकमेवाद्वितीय शक्ति है, वही सत्य है, वही आनन्द है, वही सृजन, रक्षण और संहार करती है। अपनी ईश्वर की कल्पना उसी सत्य का सीमित अँश है। अन्तिम सत्य का यह मूलभूत रूप किसी धर्म-विशेष का नहीं, अपितु सर्वमान्य है। यही रूप हम सबको एकत्रित कर सकता है। सभी धर्म वस्तुतः ईश्वर की ओर ही उन्मुख करते हैं। अतः यह सत्य आप क्यों स्वीकार नहीं करते कि मुसलमानों, ईसाइयों और हिन्दुओं का परमात्मा एक ही है और हम सब उसके भक्त हैं। एक सूफी के रूप में तो आपको इसे स्वीकार करना चाहिए।

इस पर उनके पास कोई उत्तर नहीं था। दुर्भाग्य से हमारी बातचीत यहीं समाप्त हो गई।

डॉ. जिलानी : *हिन्दू और मुसलमानों के बीच आपसी सद्भावना बहुत है, फिर भी समय-समय पर छोटे-बड़े झगड़े होते ही रहते हैं। इन झगड़ों को मिटाने के लिए आपकी राय में क्या किया जाना चाहिए?*

श्रीगुरुजी : आप अपने लेखों में इन झगड़ों का एक कारण हमेशा बताते हैं। वह कारण है गाय। दुर्भाग्य से अपने लोग और राजनीतिक नेता भी इस कारण का विचार नहीं करते। परिणामतः देश के बहुसंख्यकों में कटुता की भावना उत्पन्न होती है। मेरी समझ में नहीं आता कि गोहत्या के विषय में इतना आग्रह क्यों है? इसके लिए कोई कारण दिखाई नहीं देता। इस्लाम-धर्म गोहत्या का आदेश नहीं देता। पुराने जमाने में हिन्दुओं को अपमानित करने का वह एक तरीका रहा होगा। अब वह क्यों चलना चाहिए?

इसी प्रकार की अनेक छोटी-बड़ी बातें हैं। आपस के पर्वों -त्यौहारों में हम क्यों सम्मिलित न हों? होलिकोत्सव समाज के सभी स्तरों के लोगों को अत्यंत उल्लासयुक्त वातावरण में एकत्रित करने वाला त्यौहार है। मान लीजिए कि इस त्यौहार के समय किसी मुस्लिम बन्धु पर कोई रंग उड़ा देता है, तो इतने मात्र से क्या कुरान

की आज्ञाओं का उल्लंघन हो जाता है? इन बातों की ओर एक सामाजिक व्यवहार के रूप में देखा जाना चाहिए। मैं आप पर रंग छिड़कूँ, आप मुझ पर छिड़कें। हमारे लोग तो कितने ही वर्षों से मोहर्रम के सभी कार्यक्रमों में सम्मिलित होते आ रहे हैं। इतना ही नहीं तो अजमेर के उर्स जैसे कितने ही उत्सवों-त्यौहारों में मुसलमानों के साथ हमारे लोग भी उत्साहपूर्वक सम्मिलित होते हैं। किन्तु हमारी सत्यनारायण की पूजा में यदि कुछ मुसलमान बन्धुओं को हम आमंत्रित करें तो क्या होगा? आपको विदित होगा कि द्रमुक के लोग अपने मन्त्रिमंडल के एक मुस्लिम मन्त्री को रामेश्वर के मन्दिर में ले गए। मन्दिर के अधिकारियों, पुजारियों और अन्य लोगों ने उक्त मन्त्री का यथोचित मान-सम्मान किया। किन्तु उसे जब मन्दिर का प्रसाद दिया गया, तो उसने उसे फेंक दिया। प्रसाद ग्रहण करने मात्र से तो वह धर्मभ्रष्ट होने वाला नहीं था। इसी तरह की छोटी-छोटी बातें हैं। अतः पारस्परिक आदर की भावना उत्पन्न की जानी चाहिए।

हमें जो वृत्ति अभिप्रेत है, वह सहिष्णुता मात्र नहीं है। अन्य लोग जो कुछ करते हैं, उसे सहन करना सहिष्णुता है। परन्तु अन्य लोग जो कुछ करते हों, उसके प्रति आदर-भाव रखना सहिष्णुता से ऊँची बात है। इसी वृत्ति, इसी भावना को प्राधान्य दिया जाना चाहिए। हमें सबके विषय में आदर है। यही मार्ग मानवता के लिए हितकारक है। हमारा वाद सहिष्णुतावाद नहीं, अपितु सम्मानवाद है। दूसरों के मत का आदर करना हम सीखें तो सहिष्णुता स्वयंमेव चली आएगी।

डॉ. जिलानी : *हिन्दू और मुसलमानों के बीच सामंजस्य स्थापित करने के कार्य के लिए आगे आने की योग्यता किसमें है- राजनीतिक नेता में, शिक्षाशास्त्री में या धार्मिक नेता में?*

श्रीगुरुजी : इस मामले में राजनीतिज्ञ का क्रम तो सबसे अन्त में लगता है। धार्मिक नेताओं के विषय में भी यही कहना होगा। आज अपने देश में दोनों ही जातियों के धार्मिक नेता अत्यंत संकुचित मनोवृत्ति के हैं। इस काम के लिए नितान्त अलग प्रकार के लोगों की आवश्यकता है। जो लोग धार्मिक तो हों, किन्तु राजनीतिक

नेतागिरी न करते हों और जिनके मन में समग्र राष्ट्र का विचार सदैव जागृत रहता हो। धर्म के अधिष्ठान के बिना कुछ भी हासिल नहीं होगा। धार्मिकता होनी ही चाहिए। रामकृष्ण मिशन को ही लें। यह आश्रम व्यापक और सर्वसमावेशक धर्म-प्रचार का कार्य कर रहा है। अतः आज तो इसी दृष्टिकोण और वृत्ति की आवश्यकता है कि ईश्वरोपासनाविषयक विभिन्न श्रद्धाओं को नष्ट न कर हम उनका आदर करें, उन्हें टिकाए रखें और उन्हें वृद्धिगत होने दें।

राजनीतिक नेताओं के जो खेल चलते हैं, उन्हीं से भेदभाव उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। जातियों, पन्थों पर तो वे जोर देते हैं, साथ ही भाषा, हिन्दू-मुस्लिम आदि भेद भी वे पैदा करते हैं। परिणामतः अपनी समस्याएँ अधिकाधिक जटिल होती जा रही हैं। जाति-संबंधी समस्या के मामले में तो राजनीतिक नेता ही वास्तविक खलनायक हैं। दुर्भाग्य से राजनीतिक नेता ही आज जनता का नेता बन बैठा है, जबकि चाहिए तो यह था कि सच्चे, विद्वान, सुशील और ईश्वर के परमभक्त महापुरुष जनता के नेता बनते। परन्तु इस दृष्टि से आज उनका कोई स्थान ही नहीं है। इसके विपरीत नेतृत्व आज राजनीतिक

राजनीतिक नेताओं के जो खेल चलते हैं, उन्हीं से भेदभाव उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। जातियों, पन्थों पर तो वे जोर देते हैं, साथ ही भाषा, हिन्दू-मुस्लिम आदि भेद भी वे पैदा करते हैं। परिणामतः अपनी समस्याएँ अधिकाधिक जटिल होती जा रही हैं।

नेताओं के हाथों में है। जिनके हाथों में नेतृत्व है, वे राजनीतिक पशु बन गए हैं। अतः हमें लोगों को जागृत करना चाहिए।

दो दिन पूर्व ही मैंने प्रयाग में कहा है कि लोगों को राजनीतिक नेताओं के पीछे नहीं जाना चाहिए, अपितु ऐसे सतपुरुषों का अनुकरण करें, जो परमात्मा के चरणों में लीन हैं, जिनमें चारित्र्य है और जिनकी दृष्टि विशाल है।

डॉ. जिलानी : *क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि जातीय*

सामंजस्य-निर्माण का उत्तरदायित्व बहुसंख्यक समाज के रूप में हिन्दुओं पर है?

श्रीगुरुजी : हाँ! मुझे यही लगता है, परन्तु कुछ कठिनाईयों का विचार किया जाना चाहिए। अपने नेतागण सम्पूर्ण दोष हिन्दुओं पर लादकर मुसलमानों को दोषमुक्त कर देते हैं। इसके कारण जातीय उपद्रव करने के लिए अल्पसंख्यक समाज, यानी मुस्लिमों को सब प्रकार का प्रोत्साहन मिलता है। इसलिए हमारा कहना है कि इस मामले में दोनों को अपनी जिम्मेदारियों का पालन करना चाहिए।

डॉ. जिलानी : *आपकी राय में आपसी सामंजस्य की दिशा में तत्काल कौन से कदम उठाए जाने चाहिएँ?*

श्रीगुरुजी : इस तरह से एकदम कुछ कहना बहुत ही कठिन है, फिर भी सोचा जा सकता है। व्यापक पैमाने पर धर्म की यथार्थ शिक्षा देना एक उपाय हो सकता है। राजनीतिक नेताओं द्वारा समर्थित आज जैसी धर्महीन शिक्षा नहीं, अपितु सच्चे अर्थों में धर्म-शिक्षा लोगों को इस्लाम व हिन्दू धर्म का ज्ञान कराए। सभी धर्म मनुष्य को महान, पवित्र और मंगलमय बनने की शिक्षा देते हैं। यह लोगों को सिखाया जाए।

दूसरा उपाय यह हो सकता है कि जैसा हमारा इतिहास है, वैसा ही हम पढ़ाएँ। आज जो इतिहास पढ़ाया जाता है, वह विकृत रूप में पढ़ाया जाता है। मुस्लिमों ने इस देश पर आक्रमण किया हो तो वह हम स्पष्ट रूप से बताएँ, परन्तु साथ ही यह भी बताएँ कि वह आक्रमणकारी भूतकालीन हैं और विदेशियों ने किया है। मुसलमान यह कहें कि वे इस देश के मुसलमान हैं और ये आक्रमण उनकी विरासत नहीं हैं। परन्तु जो सही है, उसे पढ़ाने के स्थान पर जो असत्य है, विकृत है, वही आज पढ़ाया जाता है। सत्य बहुत दिनों तक दबाकर नहीं रखा जा सकता। अंततः वह सामने आता है और तब उससे लोगों में दुर्भावना निर्माण होती है। इसलिए मैं कहता हूँ इतिहास जैसा है, वैसा ही पढ़ाया जाए। अफजलखाँ को शिवाजी ने मारा है, तो वैसा ही बताओ। कहो कि एक विदेशी आक्रामक और एक राष्ट्रीय नेता के तनावपूर्ण संबंधों के कारण यह घटना हुई। यह

भी बताएँ कि हम सब एक ही राष्ट्र हैं, इसलिए हमारी परम्परा अफजलखाँ की नहीं है। परन्तु यह कहने की हिम्मत कोई नहीं करता। इतिहास के विकृतिकरण को मैं अनेक बार धिक्कार चुका हूँ और आज भी उसे धिक्कारता हूँ।

आज जो इतिहास पढ़ाया जाता है, वह विकृत रूप में पढ़ाया जाता है। मुस्लिमों ने इस देश पर आक्रमण किया हो तो वह हम स्पष्ट रूप से बताएँ, परन्तु साथ ही यह भी बताएँ कि वह आक्रमणकारी भूतकालीन हैं और विदेशियों ने किया है। मुसलमान यह कहें कि वे इस देश के मुसलमान हैं और ये आक्रमण उनकी विरासत नहीं है।

डॉ. जिलानी : *भारतीयकरण पर बहुत चर्चा हुई, भ्रम भी बहुत निर्माण हुए। क्या आप बता सकेंगे कि ये भ्रम कैसे दूर किए जा सकेंगे?*

श्रीगुरुजी : भारतीयकरण की घोषणा जनसंघ द्वारा की गई, किन्तु इस मामले में संभ्रम क्यों होना चाहिए? भारतीयकरण का अर्थ सबको हिन्दू बनाना तो है नहीं।

हम सभी को यह सत्य समझ लेना चाहिए कि हम इसी भूमि के पुत्र हैं। अतः इस विषय में अपनी निष्ठा अविचल रहना अनिवार्य है। हम सब एक ही मानवसमूह के अंग हैं, हम सबके पूर्वज एक ही हैं, इसलिए हम सबकी आकांक्षाएँ भी एक समान हैं- इसे समझना ही सही अर्थों में भारतीयकरण है।

भारतीयकरण का यह अर्थ नहीं कि कोई अपनी पूजा-पद्धति त्याग दे। यह बात हमने कभी नहीं कही और कभी कहेंगे भी नहीं। हमारी तो यह मान्यता है कि उपासना की एक ही पद्धति सम्पूर्ण मानव जाति के लिए सुविधाजनक नहीं।

डॉ. जिलानी : *आपकी बात सही है। बिल्कुल सौ फीसदी सही है। अतः इस स्पष्टीकरण के लिए मैं आपका बहुत ही कृतज्ञ हूँ।*

श्रीगुरुजी : फिर भी मुझे संदेह है कि सब बातें मैं स्पष्ट कर सका हूँ या नहीं।

डॉ. जिलानी : *कोई बात नहीं। आपने अपनी ओर से बहुत अच्छी तरह से स्पष्ट किया है। कोई भी विचारशील और भला आदमी आपसे असहमत नहीं होगा। क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि अपने देश का जातीय बेसुरापन समाप्त करने का उपाय ढूँढने में आपको सहयोग दे सकें, ऐसे मुस्लिम नेताओं की और आपकी बैठक आयोजित करने का अब समय आ गया है? ऐसे नेताओं से भेंट करना क्या आप पसन्द करेंगे?*

श्रीगुरुजी : केवल पसन्द ही नहीं करूँगा, ऐसी भेंट का मैं स्वागत करूँगा।

●●●

ईसाइयत के बारे में संघ का दृष्टिकोण

*राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक ज्येष्ठ कार्यकर्ता डॉ. श्रीपति शास्त्री को फरवरी, 1983 में पुणे स्थित जर्मन जेस्युइट मिशनरी श्री मैथ्यू आर. लिदरी, एस. जे. की ओर से जुलाई, 1983 में होने जा रहे एक सेमिनार - ''**वर्तमान भारत में ईसाइयत की प्रासंगिकता**'' पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचार प्रस्तुत करने के लिए एक निमन्त्रण प्राप्त हुआ।*

ज्ञानदीप विद्यापीठ यह तत्वज्ञान एवं रिलिजन की एक संस्था है जो पुणे स्थित डी नोबिली कॉलेज में जेस्युइटस द्वारा चलाई जाती है, इस संस्था के सभागृह में श्री फेलिक्स राज, एस. जे. की अध्यक्षता में छात्र, प्राध्यापक, प्रिस्ट्स, नन्स एवं मिशनरीज के सामने 8 जुलाई, 1983 को डॉ. श्रीपति शास्त्री का व्याख्यान हुआ। व्याख्यान के बाद डॉ. शास्त्री के साथ करीब एक घंटे तक सवाल-जवाब भी हुए। यह सारा व्याख्यान तथा सवाल-जवाब रिकॉर्ड किए गए तथा हमारी प्रार्थना पर सेमिनार के आयोजकों ने उसे प्रकाशित करने की अनुमति देने की कृपा की है। यह व्याख्यान तथा सवाल-जवाब यहाँ प्रस्तुत हैं-

हिन्दू : विभिन्न मत-सम्प्रदायों का समुच्य (संसद)

भारत एक प्राचीन राष्ट्र है, शायद सर्वाधिक प्राचीन। उसने इतिहास के क्रूर थपेड़ों को सहन करते हुए भी एक साँझी संस्कृति से बंधे रहकर एक लम्बा सुसभ्य जीवन व्यतीत किया है। विशेष रूप से उल्लेखनीय बात यह है कि इस साँझी संस्कृति ने शताब्दियों

तक लगातार समाज को बाँधे रखा। इस गौरवपूर्ण लम्बे इतिहास में अनेक सम्प्रदायों को इस संस्कृति ने सैद्धान्तिक आधार दिया और नए-नए सम्प्रदाय भी भारत में उत्पन्न हुए। एक बड़ा जन समुदाय वेदों को अपनी उपासना पद्धति का आधार मानता है। ये हिन्दू कहलाता है। देश में अच्छी संख्या में वे लोग भी हैं जो वेदों को प्रमाण नहीं मानते। ये सब भी हिन्दू हैं। इस देश की अधिकांश जनता मूर्ति पूजक है-वह भी हिन्दू ही है। आर्य समाजी व उन जैसे कुछ अन्य बन्धु मूर्ति पूजा नहीं मानते, तो भी वे हिन्दू ही हैं। कुछ अन्य लोग जो स्वयं को अज्ञेयवादी कहते हैं और ईश्वर की सत्ता के विषय में निश्चित नहीं हैं, वे भी हिन्दू हैं। प्राचीन काल में भारत में एक मनीषी थे चारवाक, वे नास्तिक थे और भगवान के अस्तित्व में उनका कोई विश्वास नहीं था। चारवाक और उनके अनुयायी विशुद्ध रूप से भौतिकवादी हैं पर वे सभी हिन्दू ही हैं। निष्कर्ष यह है कि हिन्दू किसी विशेष पूजा पद्धति को मानने वाले का नाम नहीं है, बल्कि हिन्दुत्व अनेक सम्प्रदायों की एक समूहवाचक संज्ञा है, एक संगम स्थल है, एक संसद है। भारत, इसके इतिहास और इसकी साँझी सांस्कृतिक विरासत से सभी हिन्दू प्रेम करते हैं। भारत में ईसाइयत ने अभी स्वयं को इससे अलग रखा है। मुझे लगता है कभी दूर भविष्य में ईसाई धर्म भी इससे जुड़ जाएगा। हिन्दू की दृष्टि में ईसाई भगवान, मुस्लिम भगवान, बौद्ध भगवान या जैन भगवान जैसे अलग-अलग भगवान नहीं हैं। हिन्दू के लिए भगवान एक सीधा, सरल और शुद्ध भगवान है। हिन्दू सच्चा भगवान और झूठा भगवान जैसा अन्तर नहीं करता। हिन्दू भगवान के किसी विशेष प्रकार को या एक रूप को सभी मनुष्यों के लिए समान रूप से ग्राह्य या स्वीकार्य नहीं मानता। हिन्दू सभी साधकों को समान रूप से स्वीकार करता है, उनके प्रति सहानुभूति और सम्मान का भाव रखता है, चाहे वे साधना के किसी भी पायदान पर खड़े हों। वह सभी उपासना पद्धतियों को, सभी भाव-भावनाओं और विचारों को तथ्यात्मक रूप से ठीक मानता है।

हम हिन्दू इस बात में गर्व और गौरवान्वित अनुभव करते हैं कि हमारे देश में अनेक मत-मतान्तरों के लोग इतनी प्रचुर संख्या में

हैं। यदि कल ऐसी स्थिति बनती है कि कोई व्यक्ति किसी विशेष प्रकार से पूजा अर्चना करना चाहता है और यहाँ उसके लिए कोई गुंजाईश न हो तो मेरी दृष्टि से भारत इस मामले में गरीब हो जाएगा। हमारे पूर्वजों ने विभिन्न मतावलम्बियों का यहाँ सदा ही स्वागत किया है और कभी भी यह नहीं सोचा कि ये मत भारत की एकता, एकात्मता और प्रसन्नता के लिए खतरा पैदा कर सकते हैं।

विभाजन का मानसिक आघात

1947 में हुआ भारत का दुर्भाग्यपूर्ण विभाजन हमारे लिए अकथनीय पीड़ा और अभूतपूर्व अपमान लेकर आया। एक तरफ हम देश की आजादी के संदर्भ में एक रक्तहीन क्रान्ति की बात कर रहे थे, दूसरी ओर पुरुष, महिलाएँ व बच्चे तक रक्त स्नान करने के लिए विवश थे। आजाद भारत, सुखी भारत, प्रेम, सद्भावना और बन्धुत्व भाव से परिपूरित भारत का भव्य सपना साम्प्रदायिकता के कारण टूटकर चूर-चूर हो गया। महात्मा गाँधी तथा अन्य महान् देशभक्तों के प्रयास क्षणभर में समाप्त हो गए। इसलिए यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि हम समाज में अपने मजहब और राष्ट्र को क्या स्थान देते हैं, इसका गहराई से विचार करें।

आजादी के बाद और आज भी मजहबी अल्पसंख्यकों की समस्या बहुत विकट और षड्यंत्रपूर्ण दिखाई देती है। भारत की मनोरचना और भारत विभाजन की त्रासदी ने भारतीय संविधान सभा को भी अल्पसंख्यक समुदायों के विषय में सोचने को बाध्य कर दिया। धार्मिक (मजहबी) स्वतन्त्रता के नाम पर अल्पसंख्यकों के अधिकारों से संबंधित अनेक आलेख हैं, जबकि किसी अन्य संविधान में इस प्रकार के विषयों की चर्चा तक नहीं है। हम भारत को अल्पसंख्यकों का स्वर्ग भी कह सकते हैं। इस सबके बावजूद यह भी सच है कि किसी भी अन्य देश में अल्पसंख्यकों ने राष्ट्रीय एकता और सुख समृद्धि को इतनी हानि नहीं पहुँचाई जितनी कि भारत में।

इस समस्या के एक हिस्से के रूप में ईसाइयत के भी अध्ययन करने की आवश्यकता है। मजहब के नाते ईसाई इस देश से सदियों

से जुड़े हैं और इनकी संख्या कुल जनसंख्या का लगभग 3 प्रतिशत है। केरल व पूर्वोत्तर राज्यों में इनकी संख्या अधिक है। आन्ध्र और तमिलनाडू में भी इनकी संख्या काफी है, जबकि गोवा जैसे कुछ स्थानों पर ईसाई प्रभावी भी हैं और निर्णायक भी।

पृष्ठभूमि

प्रारम्भ में ईस्ट इंडिया कं. के शासकों ने मिशनरी गतिविधियों में कोई उत्साह नहीं दिखाया। कम्पनी को लगा कि भारतीय धर्म के मामले में बहुत संवेदनशील हैं। 1781 में, ब्रिटेन की हाउस ऑफ कॉमन्स की एक कमेटी में एक सर्वसम्मत निष्कर्ष सामने आया कि भारत के स्थानीय लोगों के धर्म में कोई भी हस्तक्षेप ब्रिटिश शक्ति को पूरी तरह नष्ट कर देगा। धीरे-धीरे धार्मिक निष्पक्षता की नीति बनाई गई, लेकिन गवर्नरों और गर्वनर जनरल की सहानुभूति और समर्थन मिशनरी गतिविधियों को प्राप्त था। मतान्तरण की सभी ताकतों ने धीरे-धीरे भारत के ईसाइकरण के लिए वातावरण बनाया। जुलाई, 1813 में इन ताकतों को भारी सफलता मिली। चार्टर्ड-एक्ट में एक नई धारा डाली गई, जिसके तहत सभी मत विश्वासों के मिशनरियों को भारत प्रवेश की अनुमति प्रदान की गई। विधानमंडल द्वारा मिशनरी प्रयत्नों को मान्यता प्राप्त होने के कारण मतान्तरण के आन्दोलन को भारी प्रोत्साहन मिला।

लम्बी बहस और उसमें मतान्तरणवादी पार्टी की जीत के कारण सारे यूरोप में एक विशेष प्रकार का वातावरण बना। इस वातावरण के कारण अन्य देशों से भी भारत में ईसाई मत के प्रचार के लिए पादरी उपलब्ध होने लगे। 1813 में चार्टर्ड-एक्ट में जोड़ी गई मतान्तरण संबंधी धारा के कारण भारत में ईसाइयत का प्रचार करने के लिए सारे ईसाई जगत से भारी मात्रा में और स्थाई रूप से काम करने वालों की बाढ़ सी आ गई, उदाहरण के लिए 1813 में भारत में 6 अमेरिकी प्रोटेस्टेंट मिशनरी काम कर रहे थे, जबकि 1910 में इनकी संख्या बढ़कर 1800 हो गई। उस समय से मिशनरियों का सतत और वेगवान प्रवाह भारत में होता रहा। यह भी

एक पहलू है कि ईसाई धर्म शासकों का धर्म था।

मिशनरी यह जानते थे कि ईसाइयत के कुछ तत्व, जैसे कि उनकी असहिष्णुता की भावना, भारतीय मानस के प्रतिकूल है, तो भी उन्होंने इसकी परवाह नहीं की। उनका उद्देश्य स्पष्ट था कि वे भारत की सहिष्णुता और उदारता की विरासत को भी ईसाइयत का अनुगामी बनाना चाहते थे। परिणामस्वरूप अनेक हिन्दू ईसाइयत को पश्चिम का राजनीतिक और धार्मिक हथियार मानते थे। हिन्दुओं का यह मत सही ही माना जाना चाहिए।

सुखद प्रसंग

आजादी के पहले कुछ प्रमूख भारतीय ईसाई साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व के विरोध में खड़े हो गए। 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में जोसेफ वपतिस्ता, जो कि बम्बई के प्रमुख ईसाई नेता थे, ने कहा, *''मैं भारतीय ईसाइयों के लिए अलग निर्वाचक मंडल के एकदम खिलाफ हूँ।''* अलग निर्वाचकमण्डल का विरोध करने के कारण उन्हें शायद सबसे बुद्धिमान व्यक्ति माना जाना चाहिए, क्योंकि बहुसंख्यक समाज की सहानुभूति उनके साथ बनी रही। वे मुस्लिम लीग के नेताओं के विरुद्ध खम ठोककर खड़े हो गए और उन्होंने मुस्लिम लीग के अलग निर्वाचकमण्डल के प्रस्ताव का डटकर विरोध किया। एक और प्रमुख ईसाई नेता बिशप अजरिया (Azriah) ने भी साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व के प्रस्ताव का विरोध किया। 1928 में उन्होंने एक अपील जारी की, जिसमें उन्होंने सभी प्रकार के साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व के प्रस्तावों को समाप्त करने को कहा। वाईएमसीए आन्दोलन के श्री के.जे. पॉल ने कहा *''हम योग्यता, चरित्र और कार्य प्रवणता की सर्वोच्चता के साथ समझौता नहीं कर सकते। सामाजिक नेतृत्व में हमें सत्यनिष्ठा पर जोर देना चाहिए। हमें जातिवाद और साम्प्रदायिकता के विरुद्ध संघर्ष छेड़ना होगा।''*

कुछ इस प्रकार के ईसाई नेता भी थे जो विशुद्ध रूप से भारत के और भारतीय दृष्टि के पोषक थे, यद्यपि उनकी संख्या काफी कम थी। हिन्दुओं ने भी उनकी नेकनियत का हृदय से स्वागत

किया। सामान्यतः भारत में ईसाइयत ब्रिटिश शासन के साथ और कुछ सीमा तक पुर्तगाली शासन के साथ सम्बद्ध थी। भारतीय ईसाई यह जानते थे कि उनकी निष्ठा सवालों के घेरे में है और इसलिए एक भारतीय ईसाई, एच.सी. मुखर्जी ने बड़े स्पष्ट शब्दों में बताया कि हमारा प्रत्येक शब्द और प्रत्येक कार्य इस प्रकार से हो कि किसी गैर ईसाई बन्धु को यह कहने का मौका नहीं मिले कि ईसाई बनने से हमारी भारतीयता में जरा सी भी कमी आ गई है और यह भी कि देश की भलाई के लिए किए जाने वाले सभी कामों में हम जिम्मेदारीपूर्वक अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए हमेशा तत्पर हैं।

जीसस क्राईस्ट और चर्च

मेरी क्राईस्ट के प्रति श्रद्धा है। ऐसा इसलिए भी है कि मैं हिन्दू हूँ। ईसाइयत में प्रशंसा करने योग्य कई बातें हैं : जीसस का जीवन, देवदूतों के उपदेश, अनेक शिक्षाप्रद दृष्टांत और उनमें प्रस्तुत आदर्श ये सभी स्तुत्य हैं। पर्वत पर दिए गए धर्मोपदेश (Sermon on the Mount) निश्चित ही मन मस्तिष्क पर गहरी छाप छोड़ते हैं। इस सब के बावजूद व्यक्ति रूढ़िवादी ईसाइयत व चर्च से अपना मेल नहीं बैठा पाता। इसलिए भारत में जब ईसाइयत हिन्दुत्व को चुनौती देती है तो हिन्दुओं को क्राइस्ट के सदोपदेशों और ईसाइयों की हठधर्मिता और संकुचितता में साफ अन्तर दिखाई पड़ता है। यही बातें ईसाइयों को जीसस से अलग कर देती हैं। हिन्दू जीसस व पवित्र बाइबल का बहुत सम्मान करते हैं, किन्तु क्राईस्ट के नाम चलाए जा रहे चर्च के कार्यकलापों को गम्भीर सन्देह की दृष्टि से देखते हैं।

चर्च को हिन्दुत्व में दोष ही दोष दिखाई देते हैं। उन्होंने एक पतित और मूल्यहीन भारत की झूठी कहानी गढ़ ली है और उसी से मिशनरी जिन्दा हैं। वे इससे उबरने के लिए भी तैयार नहीं हैं। मिशनरी ने गैर ईसाई लोगों के लिए एक शब्द का अविष्कार किया है, वह शब्द है पैगन (Pagon), मिशनरी बड़े गर्व के साथ कहते हैं कि हमने पैगन भारत को छापाखाना (प्रिंटिंग प्रैस) दिया। हम इसके लिए उनको धन्यवाद देते हैं। पर हम यह कैसे भूल सकते हैं

कि सेरामपुर में स्थापित पहले छापाखाने केरीज प्रिंटिंग प्रैस ने जो पहला पैम्फलेट छापा, उसमें हिन्दू संस्कृति पर घृणित आक्रमण किया गया है। डेट्रोएट (Detroit) में अपनी वार्ता में स्वामी विवेकानन्द ने इस बात का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है। उन्होंने वहाँ यह बात जोर देकर कही है। उन्होंने स्पष्ट कहा था कि *''जब तुम हमारे पास मिशनरी के रूप में आते हो तो तुम्हें राष्ट्रीयता का खोल उतार देना चाहिए। जीसस कभी भी इंग्लिश अफसरों के यहाँ दावतें उड़ाते नहीं घूमे। उन्होंने यह भी चिन्ता नहीं की कि उनकी पत्नी उच्च वर्गीय योरोपियन समाज का हिस्सा बने। यदि आपके मिशनरी जीसस का अनुसरण नहीं करते हैं तो उन्हें स्वयं को ईसाई कहने का कोई अधिकार नहीं है। हमें जीसस के संदेशवाहक प्रचारक चाहिए। हम चाहते हैं कि भारत में जीसस के सच्चे अनुयायी सैकड़ों, हजारों की संख्या में आएँ। वे जीसस का सन्देश देश के सभी गाँवों और दूरस्थ सभी क्षेत्रों में फैला दें। दुर्भिक्ष पीड़ित लोगों को पैसा देकर ईसाई बनाने से जीसस के शिष्यों की संख्या नहीं बढ़ती है। सूली पर लटके हुए जीसस अपने तथाकथित शिष्यों की सभी घिनौनी करतूतें चुपचाप देख रहे हैं।''*

मतान्तरण की राजनीति

वास्तव में ईसाइयों और हिन्दुओं के बीच तनावपूर्ण संबंधों का सबसे बड़ा कारण ईसाइयों का मतान्तरण का अभियान है। जब कोई लाभ के स्थान पर बैठा समर्थ व्यक्ति सृष्टि और परमेष्टि से संबंधित अपने विचारों को कमजोर व्यक्ति पर थोपेगा तो उसका विरोध होना बहुत स्वाभाविक है। उन्हें यह समझना चाहिए कि भगवान के प्रति उसकी श्रद्धा और सृष्टि के प्रति उसकी धारणा उसके हृदय की सबसे मूल्यवान निधि है।

भारतीय ईसाई मतान्तरित ईसाई हैं या उनके वंशज हैं। ये लोग इतिहास के एक विशेष कालखण्ड में बलात् या धोखाधड़ी द्वारा ईसाई बनाए गए थे। स्वेच्छा से आस्थापूर्वक ईसाई बनने वाले बहुत विरल हैं। अपने आध्यात्मिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए यदि कोई अपना मजहब बदलता है तो इस पर किसी को भी कोई

आपत्ति नहीं है। पादरी (Rev.) तिलक और रमाबाई पंडिता इस प्रकार के उदाहरण हैं। उनके मतान्तरण ने उनके भारत और भारतीय संस्कृति की परम्परा से प्रेम को कम नहीं किया। पर गाँवों में सामूहिक मतान्तरण को क्या कहा जाएगा? क्या वास्तव में उनका मतान्तरण आध्यात्मिक कारणों से प्रेरित हैं? स्वैच्छिक मतान्तरण के पहले व्यक्ति को एक बड़ी मानसिक क्रान्ति के दौर से गुजरना पड़ता है। इस प्रकार से किसी ने भी हिन्दुत्व को नहीं त्यागा। अधिकांश मतान्तरण धमकी, लोभ, आर्थिक सहायता, अज्ञान, धोखाधड़ी, आतंकवाद और उत्पीड़न के कारण हुआ है। मतान्तरण में तलवार की भूमिका की चर्चा न करना ही अच्छा है, यह एक कुरूप भूतकाल है। जिन हिन्दुओं ने दर-दर भटक रहे यहूदियों को, अपने देश से निष्कासित पारसियों को और प्रताड़ित ईसाइयों को प्रसन्नतापूर्वक शरण दी, वे ही आज ईसाइयों के आतंक का शिकार हो रहे हैं।

एक लम्बे समय तक हिन्दुओं की जनसंख्या में गिरावट आती रही। ब्रिटिश काल में, जब मजहब को प्रतिनिधित्व का आधार बनाया गया, मतान्तरण की मिशनरी गतिविधियाँ तेज हो गईं। ईसाइयों की थोड़ी सी भी संख्या बढ़ने से और हिन्दुओं की कम होने से अनेक समस्याओं का सिलसिला प्रारम्भ हो जाता है, ये समस्याएँ राजनीतिक भी हैं और सामाजिक भी। भारत के पूर्वोत्तर में हम इसका उदाहरण देख सकते हैं। मतान्तरण का यह राजनीतिक परिणाम है।

मिशनरी विचार की मूल कल्पना ही दोषपूर्ण लगती है। विकसित संस्कृति, लम्बी दार्शनिक, नैतिक और आध्यात्मिक परम्परा वाले हिन्दुओं के पास उन्हें नरक से बचाने की तरकीब बताने मिशनरी जाए यह वास्तव में बहुत हास्यास्पद है। मानवीय सहानुभूति और सेवा कार्य तो अपने शिकार के पास पहुँचने का एक माध्यम मात्र है। इस माध्यम से मिशनरी सीधे सादे और श्रद्धावान हृदयों पर चोट ही पहुँचाते हैं। गाँधी जी ने लिखा है – *''मतान्तरण आजकल के अन्य अनेक धन्धों जैसा ही एक धन्धा बन गया है।''*

मुझे याद है कि मैंने मिशनरी की एक रिपोर्ट पढ़ी थी, जिसमें

यह बताया गया था कि मतान्तरण के लिए प्रति व्यक्ति कितना खर्च आता है और उस हिसाब से आगे के लिए बजट बनाया गया था। गाँधी जी लिखते हैं कि *''यदि मेरा पास कानून बनाने का अधिकार होता तो निश्चित रूप से मैं मतान्तरण पर रोक लगा देता।''* हिन्दू परिवार में किसी मिशनरी के आने का अर्थ है परिवार की व्यवस्था भंग होना, पहनावे, व्यवहार व आचरण, भाषा और खाने पीने के ढंग-ढर्रे में बदलाव। जिस मतान्तरण पर गाँधी जी रोक लगाना चाहते थे, उसे मिशनरी अपना मौलिक अधिकार मानते हैं। मिशनरी में सबसे अच्छी मानी जाने वाली मदर टेरेसा ने एक साक्षात्कार में मतान्तरण को सही ठहराया है। वे कहती हैं- 'मतान्तरण मनुष्य के मस्तिष्क को प्रेम से बदलता है।' उनकी अलंकारिक भाषा पर न जाते हुए यह समझ लेना जरूरी है कि मतान्तरण हिन्दू समाज पर आक्रमण है और हमें इसे सहन नहीं करना चाहिए।

एशिया महाद्वीप का एक बहुत बड़ा हिस्सा मुसलमान बन चुका है और दूसरा बड़ा हिस्सा कम्यूनिस्ट। उसके प्रवेश द्वार मिशनरी के लिए बन्द हो चुके हैं। इसलिए भारत उसके लिए एक उपजाऊ चारागाह साबित हो रहा है। ईसाई अब हमारे समाज को बदलने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं, विशेष रूप से जनजातियों में। ये छली गोरे मिशनरी हमारी गरीबी और सामाजिक बुराईयों के माध्यम से अपना मन्तव्य पूरा करने में जुटे हैं। वे मतान्तरण के लिए लोभ लालच का सहारा ले रहे हैं, जो कि एक भारी पाप है। उदाहरण के लिए पूर्वोत्तर में बेपटिस्ट मिशनरी मतान्तरण करने वालों को पॉलिस्टर के कपड़े देते हैं और यदि वे अन्य लोगों को ईसाई बनाने में सहायता करते हैं, तो उन्हें मोटर साइकिल दी जाती है। नियोगी रिपोर्ट में कहा गया है कि वे म.प्र. में 5-10 डॉलर के छोटे-छोटे कर्जे ब्याज पर देते हैं, वे यह जानते हैं कि ये कर्ज चुकाना उनके वश में नहीं होगा और ईसाई बनने पर ये कर्जे माफ कर दिए जाते हैं।

एक थोड़ा सभ्य तरीका भी है। मिशनरी समाज सेवा के नाम पर स्कूल, दवाखाने, गरीबों के लिए आश्रय स्थल और अनाथालय चलाते हैं। इस सारे तथाकथित सेवा कार्य के पीछे मूल उद्देश्य

मतान्तरण या उसके लिए वातावरण तैयार करना होता है, इसलिए ये सारे कार्य विषाक्त हो जाते हैं। इस प्रकार का सामाजिक कार्य एक बड़ा व्यापार बनकर रह गया है। ये कोई निःस्वार्थ सेवा नहीं है। सतही तौर पर देखने से ये कार्य बिल्कुल हानिरहित और मानवता के लिए सहानुभूति और प्रेम से ओत-प्रोत दिखाई पड़ते हैं। उनके भाषणों में भी सेवा, मोक्ष आदि शब्द लगातार प्रयोग होते रहते हैं। अन्तिम लक्ष्य लोगों को अहिन्दू बनाना होता है। हमारे देश के लोग सरल और सहज हैं, उन्हें ऐसे छल प्रपंचों की जानकारी भी नहीं होती। अतः वे उनके बिछाए जाल में फंस जाते हैं। जितनी मीठी भाषा का प्रयोग होता है, समझना चाहिए कि उसके पीछे उतने ही पैने दांत हैं। विनम्रता का वेश धारण किए यह उदण्डता ही है। मुझे पूतना की कहानी याद आती है, वह दुष्टा मातृत्व का झूठा प्रेम जता कर कृष्ण को अपना दूध पिलाना चाहती थी, जबकि वहाँ दूध नहीं जहर था।

ईसाइयत और राष्ट्रीय एकता

आश्चर्य है कि ईसाइयों का इतना अधिक प्रेम पाश्चात्य देशों से क्यों है? कुछ समय तक तो शायद इसे कम्युनिस्ट आन्दोलन से बचने का तरीका बताकर न्यायसंगत ठहराया जा सकता था, पर अब? मतान्तरितों को पाश्चात्य देशों के समाज से जुड़ने का एक मनोवैज्ञानिक वातावरण बनाया जाता है, यहाँ तक कि उन्हें राष्ट्रीय समाज से भी काटने का प्रयत्न होता है। भाषा, लिपि, वेशभूषा, जीवन के अन्य तौर तरीके, उत्सव और भोज यहाँ तक कि नाम इत्यादि भी बदल जाते हैं। इसी पहलू के कारण इनका राष्ट्रवादियों से संघर्ष आता है और भारत के राष्ट्रीय समाज में इनके प्रति एक गहरे सन्देह की भावना भी निर्माण हो जाती है। इन सभी बातों से स्पष्ट होता है कि ईसाई बनना केवल पूजा पद्धति में बदल नहीं है, बल्कि आस्था की प्राथमिकताओं में भी बदल है। बहुत सारे लोग इसीलिए ईसाइयों को प्रभावी पंचमार्गी (Fifth Columnist) देशद्रोही भी मानते हैं।

एक उदाहरण लें। डॉ. भीमराव अम्बेडकर परम्परागत हिन्दू समाज के कटु आलोचक थे। उन्होंने कहा मैं अपना मत (धर्म)

परिवर्तन करूँगा। मुसलमान और ईसाई ढ़ेर सारे आमन्त्रण और प्रलोभन लेकर उनके सामने आ खड़े हुए। पर उन्होंने इन सबको अमान्य कर दिया और इनको ग्राह्य विकल्प नहीं माना। सोचना होगा कि उन्होंने इनको क्यों ठुकरा दिया। उन्होंने साफ कहा, यदि मेरे लोग मुसलमान बनते हैं तो वे अराष्ट्रीय हो जाते हैं और अगर वे ईसाई बनते हैं तो इससे ब्रिटिश राज की ताकत बढ़ती है। कोई भी व्यक्ति डॉ. अम्बेडकर के इस कथन पर आश्चर्य करेगा कि ईसाई बनने से अंग्रेजी राज्य ताकतवर कैसे हो जाएगा। इंग्लैंड के विदेश मन्त्री (सेक्रेट्री ऑफ स्टेट्स) ने कहा है कि हर अगला ईसाई हमारे लिए एक मजबूत कड़ी का काम करता है और ब्रिटिश साम्राज्य के लिए शक्ति का एक अतिरिक्त स्रोत होता है।

नागालैण्ड का निर्माण इस बारे में एक ज्वलंत उदाहरण है। नेहरूजी ने भी यह स्वीकार किया है कि नागा हिल्स में जो खुला विद्रोह चल रहा है, उसके पीछे ईसाई मिशनरी के षड्यंत्र ही काम कर रहे हैं। नागाओं ने भारतीय सेना के विरुद्ध हथियारों का प्रयोग किया है। ये हथियार अमेरिका में बने थे। हमारे हवाई जहाजों को शूट करके गिरा दिया गया। हिंसक नागा विद्रोहियों का नेता देश से भाग गया। एक नामी क्रिश्चन मिशनरी-माइकल स्कॉट ने उसे शरण दे दी। माईकल स्कॉट ने उसे अनेक देश विरोधी वक्तव्य देने के लिए उकसाया, जिससे हमारे देश की प्रतिष्ठा को गहरा आघात लगा। ईसाइयों ने अन्तर्राष्ट्रीय दबाव बनाया। हम जानते ही हैं कि दिल्ली सरकार अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में कुछ ज्यादा ही संवेदनशील है। शान्ति वार्ता प्रारम्भ हो गई है और विडम्बना देखिए कि ये महाशय (माईकल स्कॉट) भी इस शान्ति वार्ता में शामिल कर लिए गए। वास्तव में उनका सपना कट्टर ईसाइयों द्वारा प्रशासित स्वतन्त्र नागालैण्ड का है। आज जब एक ईसाई नागा शिलांग आता है तो कहता है कि मैं भारत जा रहा हूँ, जैसे कि वह (भारत के बाहर का) गैर भारतीय हो।

बिहार से अलग झारखण्ड निर्माण के आन्दोलन ने जो वीभत्स रूप लिया, शबरी मलाई मन्दिर सहित केरल के मन्दिरों को अपवित्र

करने का दुस्साहसिक प्रयास, कन्याकुमारी में विवेकानन्द रॉक मेमोरियल परिसर, कुछ दिन पूर्व केरल के निलक्कल में खड़ी की गई समस्याएँ और भारतीय सेना के विरुद्ध मिजो विद्रोहियों का संघर्ष ये सभी ईसाइयों की ही देन हैं। भारत में ईसाइयत एक धर्म का रूप खोती जा रही है और साम्राज्यवादी विचार की पहचान बना रही है। उनके धार्मिक कार्यकर्ता पादरी कम, कुछ और ज्यादा हैं। एक राष्ट्रवादी अफ्रीकन ने ठीक ही कहा है– *''जब ईसाई मिशनरी हमारे यहाँ आए तो उनके हाथ में बाईबल थी और हमारे पास में जमीन, अब मामला पलट गया है, अब हमारे हाथ में बाईबल और उनके अधिकार में हमारी जमीन है।''*

विदेशी मिशनरी : कृपया आप वापस चले जाएँ

भारत में इन अनामंत्रित अतिथियों की बाढ़ सी आई हुई है, माइकल स्कॉट, फादर फैरर और ऐसे ही अन्य बहुत सारे। उनका कहना है कि हम तुम नास्तिकों को नरक से बचाने आए हैं और तुम्हें हमारी दयाद्रता पर भरोसा करना चाहिए। क्या ये ईसाई किसी मुस्लिम देश में एक भी मुसलमान को ईसाई बना सकते हैं? निश्चित जानिए कि मुसलमानों की भीड़ उन्हें तुरन्त मौत के घाट उतार देगी, इससे भी पहले कि वहाँ की सरकार उनका वीज़ा आदि निरस्त कर उन्हें देश निकाला दे। वे कम्युनिस्ट देशों में भी किसी को ईसाई नहीं बना सकते, ऐसा करते ही वे तुरन्त साम्राज्यवादियों का एजेन्ट घोषित कर दिए जाएँगे और उन्हें लेबर कैम्प में भेज दिया जाएगा। क्या यह सच नहीं है कि अनेक मिशनरी दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में देशद्रोह व तख्ता पलट के आरोपों से घिरे वहाँ की जेलों में मरणासन्न अवस्था में सड़ रहे हैं। बुद्ध भगवान के अनुयायी म्यामाँर (बर्मा) ने भी उनके प्रवेश पर रोक लगा रखी है। चीन में किस प्रकार वहाँ के मुक्केबाज उनसे पेश आते हैं, यह जानकर ही कँपकँपी छूटती है। मैं नहीं चाहता कि भारत में कोई इस प्रकार का दृश्य उपस्थित हो। ये भी सभी जानते हैं कि पाकिस्तान और बाँग्लादेश में मिशनरीज का स्वागत कैसे किया जाता है। यह

आवश्यक है कि वे भारत के विषय में भी ठीक-ठीक सोचें। अब समय आ गया है कि वे अपने घर वापस लौट जावें। उन्हें ठीक समय रहते लौट जाना चाहिए। मैं चाहता हूँ कि प्रत्येक मिशनरी अपने घर सकुशल पहुँच जाए और वे अपने साथ भारत की मधुर स्मृतियाँ ले जाए। महात्मा गाँधी ने साफ-साफ कहा है कि यदि तुमको लगता है भारत के पास विश्व को देने के लिए एक आध्यात्मिक सन्देश है, कि भारत के विभिन्न मत पंथ भी सच हैं और तुम एक सहायक व साधक के रूप में आते हो तो तुम्हारे लिए भी यहाँ स्थान है। किन्तु यदि तुम्हें लगता है कि तुम अन्धकार में भटक रहे लोगों को कुछ और सच्चा पाठ पढ़ाना चाहते हो, तो मैं समझता हूँ, तुम्हारे लिए यहाँ कोई स्थान नहीं है। इसलिए भारत के ईसाइयों को तुरन्त अपने अन्तर्राष्ट्रीयता के ढोंग से छुटकारा पा लेना चाहिए। जीसस और उसके उपदेश भारतीय ईसाइयों के हाथों में पूर्णतः सुरक्षित हैं। उन्होंने बिशप, आर्च बिशप और यहाँ तक कि कार्डिनल भी पैदा किए हैं। उन्होंने स्थानीय भाषा में ईसाइयों के विषय में ढेर सारा साहित्य भी तैयार किया है। पाश्चात्य ईसाई देश जिन्होंने ईसाइयत को अस्वीकार कर दिया है, वे इसे भारत में निर्यात करना चाहते हैं। विदेशी पादरी भी यह जानते हैं कि इसकी कोई आवश्यकता नहीं है, इसलिए विदेशी मिशनरीज़ को जितनी जल्दी हो अपने घर वापस चले जाना चाहिए। एक विदेशी भारत में छात्र, व्यापारी, पर्यटक, खिलाड़ी या किसी भी अन्य रूप में आ सकता है, सिवाय शासक या मिशनरी के। इन दोनों रूपों में तो वह अपने को हमारे ऊपर थोपना ही चाहते हैं। इसी कारण हिन्दू विरोध करता है। मुझे आपको यह याद कराने की जरूरत नहीं है, कि फादर फैरर की गतिविधियों पर हिन्दुओं ने किस प्रकार प्रतिक्रिया दी है। यह केवल एक साधारण भड़ास निकालना नहीं है, यह दीवार पर लिखे सच के समान है।

हरिजन ईसाई

चार ईसाई संगठनों के प्रतिनिधि कुछ दिन पूर्व प्रधानमन्त्री से मिले थे। वे जोर देकर कह रहे थे कि आरक्षण आदि की जो सुविधाएँ

हिन्दू हरिजनों को मिलती हैं, वे ईसाई हरिजनों को भी मिलनी चाहिए। ईसाई बनाने के पूर्व हिन्दू हरिजनों को समानता और समृद्धि के सब्जबाग दिखाए गए थे। अब वे कहते हैं कि ईसाई बनने के बाद भी उनकी स्थिति में कोई अन्तर नहीं आया है। स्पष्ट है कि मतान्तरण किसी भी तरह से उनकी स्थिति को नहीं सुधारता। इन ईसाइयों के पुनः हिन्दू धर्म में वापस आने की संख्या भी बढ़ रही है। मतान्तरण के समय आपने जो वायदे किए थे, वे आप पूरा नहीं कर पाए और अब दोनों लोकों में जो सबसे अच्छा है, वह प्राप्त करना चाहते हैं। (दोनों तरफ हाथ मारना चाहते हैं।)

जून, 1981 में, मदुरई (तमिलनाडु) से 40 कि.मी. दूर स्थित एक ग्राम कूरायूर में, 200 हिन्दुओं और 50 ईसाइयों ने इस्लाम कबूल किया था। कारण कि हिन्दू और ईसाई हरिजनों के कष्ट और निशक्तता समान थी। ईसाइयत तथाकथित जातिवाद की बुराईयाँ मिटाने में असफल है। उनमें कोई सामाजिक परिवर्तन नहीं आया है और विभिन्न वर्गों में असमानता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। पिछड़े वर्ग के मतान्तरित आज भी अन्य ईसाइयों द्वारा निचली जाति के माने जाते हैं।

महात्मा गाँधी से एक बार प्रश्न किया गया कि क्या ईसाई छुआछूत से लड़ सकते हैं, उन्हें इसका अधिकार है क्या? गाँधी जी ने कहा उन्हें अपने यहाँ व्याप्त छुआछात से लड़ना ही चाहिए। जहाँ तक हिन्दुओं में व्याप्त छुआछात का प्रश्न है, वे इससे नहीं लड़ सकते, उन्हें इससे कोई सरोकार नहीं है। हिन्दुओं में व्याप्त छुआछात और ईसाइयों में व्याप्त छुआछात अलग-अलग प्रकार की है। छुआछात मिटाओ आन्दोलन का अर्थ इतना ही है कि हिन्दू समाज में से इस बुराई को धीरे-धीरे समाप्त करना है। यह काम गैरहिन्दू प्रभावी तरीके से नहीं कर सकता। ऐसे ही जैसे हिन्दू मुसलमानों और ईसाइयों में धार्मिक सुधार नहीं ला सकते। यदि यह पूछा जा रहा है कि हिन्दुओं के तथाकथित अछूतों को ईसाई बनाकर यह बुराई दूर की जा सकती है क्या, तो मेरा उत्तर होगा कि ऐसा करके वे किसी भी रूप में व्याप्त छुआछात दूर करने के प्रयासों में सहायक नहीं होंगे। क्योंकि सुधार की प्रक्रिया सवर्ण हिन्दुओं में प्रारम्भ करनी

है। यदि सवर्ण समाज प्रायश्चित करता है तो छुआछात दूर होने में क्षण भर का समय लगेगा। मतान्तरण से यह कभी नहीं होगा। मतान्तरण से तो कटुता बढ़ेगी ही और स्थिति आज से भी बदतर हो जाएगी।

ईसाइयत एक वोट बैंक

भारत में सेक्यूलरिज्म (पंथ निरपेक्षता) रखने का उद्देश्य था कि विभिन्न मत मतान्तरों को मानने वाले सभी वर्ग एक सुखद राष्ट्रीय जीवन में समाहित हो सकें। यह भारतीय मानस के अनुकूल भी है। भारतीय संविधान में सेक्यूलरिज्म को एक उदात्त भाव के रूप में जोड़ा गया था और यह सभी राजनीतिक दलों का एक प्रिय नारा भी बन गया था। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि इसकी गलत व्याख्या की गई व इसका दुरुपयोग भी हुआ और इसको तोड़ा-मरोड़ा भी गया, ताकि हिन्दू जीवन मूल्यों और हिन्दू संस्कृति को राजकीय तन्त्र या जनता जनार्दन के बीच में प्रचारित नहीं किया जा सके। सेक्यूलरिज्म की आड़ में अनेक राजनेताओं ने मजहबी अल्पसंख्यकों को अनुचित संरक्षण दिया। उनका उद्देश्य राजनीतिक शक्ति प्राप्त करना था। मजहबी अल्पसंख्यक वोट बैंक बनकर रह गए।

इस प्रकार इन अल्पसंख्यकों को विशेष सुविधा देने में उनके निहित स्वार्थ पनपने लगे। अपना राजनीतिक उल्लू सीधा करने के लिए उन्होंने अल्पसंख्यकों के छोटे-छोटे ग्रुप बना लिए। सरकार ने अल्पसंख्यक आयोग का गठन कर डाला। राजनीतिक नेता इन अल्पसंख्यक समुदायों के राजनीतिक व्यवहार को अच्छी तरह समझने लगे हैं। उन्होंने ईसाई अल्पसंख्यकों को भी इसी ढाँचे में ढालकर लाभ उठाने का उपक्रम प्रारम्भ कर दिया है।

मतान्तरों की वापसी

बहुत दिनों से हिन्दुओं ने एक आत्मघाती परम्परा बना ली थी कि हिन्दू समाज से बाहर जाने का रास्ता तो था पर अन्दर आने के दरवाजे बन्द थे। उन्होंने मतान्तरित लोगों को पुनः अपने पुरखों के

धर्म में लौटने पर पाबन्दी लगा रखी थी। सौभाग्य से कुछ समय पूर्व हिन्दुओं को इस एकतरफा बहिर्गमन के खतरों का अहसास हो गया है और उन्होंने अपने दरवाजे इन सभी के लिए खोल दिए हैं। यदि ईसाई मतान्तरण को अपना मूलभूत अधिकार मानते हैं तो, यही अधिकार हिन्दुओं का भी है, ताकि वे अपने बिछुड़े भाईयों को वापस ला सकें। जैसा कि डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी पुस्तक 'इंडिया डिवाइडिड' (India Divided) में लिखा है, *''यदि हिन्दू भी गैर हिन्दुओं को अपने धर्म में मतान्तरित करने लगे, तो गैर हिन्दुओं को शिकायत करने का कोई अधिकार नहीं है, विशेषकर तब जब वे स्वयं ही मतान्तरण में लगे हुए हैं। हिन्दुओं को भी अपने धर्म प्रचार का उतना ही अधिकार है, जितना अन्यों को। कठिनाई यह है कि व्यक्ति सदा तर्क, न्याय या औचित्य के विचार से नहीं चलता।''* एक बात यह भी ध्यान देने योग्य है कि हिन्दुओं के लिए अन्यों को अपने साथ लेना मतान्तरण नहीं माना जाना चाहिए, यह तो केवल घर वापसी का मामला है। ईसाई विभिन्न राजनीतिक दलों व राजनेताओं की वोट के लिए कमजोरी का फायदा उठा रहे हैं, बल्कि उनका शोषण कर रहे हैं। गत दिनों जिस प्रकार से ईसाइयों ने धर्म स्वातन्त्र्य विधेयक (Freedom of Religion Bill) का विरोध किया, महाराष्ट्र की कुछ पुस्तकों के विरुद्ध आन्दोलन चलाया, कन्याकुमारी का घटनाक्रम और केरल के निलेक्कल में उपद्रव खड़ा किया, ये सब इस बात का प्रमाण है कि ईसाई अपनी वोट की ताकत के बल पर राजनीतिक दबाव बना सकते हैं। ये सभी घटनाएँ इस बात को साबित करती हैं कि भारतीय ईसाइयों ने मजहब के नाम पर हिंसा का रास्ता अपना लिया है।

ईसाइयत और पंथनिरपेक्षता

सेक्युलरिज्म को अपनाने का उद्देश्य था कि विभिन्न मत पंथों के लोग प्रसन्नतापूर्वक साथ-साथ रह सकें। ईसाई चर्च को भी सेक्युलरिज्म के सिद्धान्त को मानने में कोई झिझक नहीं है। सर्वधर्म समभाव या सेक्युलरिज्म पर जब कोई गैर हिन्दू समाज अनुकूल

प्रतिक्रिया करता है तो सीधा सादा हिन्दू उल्लास से भर जाता है। पर आप सभी को धोखा नहीं दे सकते। मुझे माओत्से तुंग के जीवन का एक प्रसंग याद है। लाँग मार्च के दिनों में एक अमेरिकी पत्रकार ने माओ से पूछा कि अमेरिका में अनेक लोगों का विश्वास है कि आप भूमि कानून के सुधारक हैं, न कि कम्युनिस्ट। आपका क्या कहना है? माओ ने मुस्कराते हुए कहा, ''मुझे इस बात की कोई परवाह नहीं है कि कुछ पिल्ले मुझे क्या कहते हैं, जब तक कि उनका विश्वास मेरे आन्दोलन में सहायक है।'' ईसाई गला फाड़-फाड़ कर सेक्युलरिज्म की बात करते हैं, क्योंकि ऐसा करने से उन्हें मतान्तरण व उनके अंतर्राष्ट्रीयकरण करने की गतिविधियों की छूट मिल जाती है। यदि उनसे पूछा जाए कि क्या वे अन्य मतावलम्बियों को भी इस प्रकार की छूट देने के लिए तैयार हैं तो वे स्पष्ट मना कर देते हैं और कहते हैं कि हमारा मजहब इस बात की अनुमति नहीं देता। उनका कहना है कि हम गैर ईसाइयों को नरक से बचाने आए हैं और भगवान के एकमात्र पुत्र में विश्वास जताने और केवल उसी के शब्दों को मानने के लिए तैयार करने आए हैं। सेक्यूलरिज्म की यही विडम्बना है। मदर टेरेसा से एक साक्षात्कार में पूछा गया कि चर्च या गेलिलियो में से आप किसको सही मानेंगी तो उन्होंने असंदिग्ध शब्दों में बिना किसी हिचक के कहा चर्च को। यूरोप ने बेकार ही अनेक सदियों तक तर्क को अन्धविश्वास से ऊपर रखने की कवायद की। ईसाइयों में लगभग सभी अच्छे और महान् व्यक्ति, यद्यपि प्रशंसनीय हैं, पर जब चर्च का प्रश्न सामने आता है, उनके मन मस्तिष्क बन्द हो जाते हैं।

मार्ग क्या है? राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा सुझाया रास्ता

संघ के प्रमुख स्व. श्री गोलवलकर और वर्तमान प्रमुख श्री देवरस मजहब को राष्ट्रीयता का अनिवार्य तत्व नहीं मानते। यूरोप में बहुत लम्बे समय तक मजहब को एकता का मजबूत आधार माना जाता रहा और अनेक राज्यों ने अपने निवासियों को एक मजहब में बाँधने के लिए सभी प्रकार के प्रयास किए। संघ की राष्ट्र विषयक

अवधारणा में पूजा पद्धति एक होना अनिवार्य नहीं है। राष्ट्रीयता एक विशेष प्रकार की भावना है, जो सामाजिक और राजनीतिक विषयों पर सभी की निष्ठा और दृष्टिकोण को समान रूप से बाँधे रखती है। समान पूजा पद्धति के बजाए, समान जीवन शैली हिन्दू राष्ट्रीयता के अस्तित्व का उल्लेखनीय तत्व है। एकता या एकात्मता की हिन्दू अवधारणा में सामंजस्य की भावना महत्वपूर्ण है, न कि एकरूपता। एक व्यक्ति राष्ट्रीयता के नाते हिन्दू हो सकता है, जबकि उपासना के मामले में वह सनातनी, आर्यसमाजी, मुसलमान, ईसाई, सिख या बौद्ध कुछ भी हो सकता है।

गोलवलकर के हिन्दुत्व में जीसस, मौहम्मद, जोरास्टर व मौजेज के लिए पर्याप्त स्थान है। यदि उन्हें कोई यह सुझाव देता कि मुसलमानों या ईसाइयों को समान अधिकार नहीं दिए जाने चाहिए, उन्हें यह कदापि सहन नहीं था। पूजा पद्धति के आधार पर लोगों में भेदभाव करना उन्हें अहिन्दू विचार लगता था। उन्होंने इस विषय को इस प्रकार कहा, ''जो अहिन्दू यहाँ रहते हैं उनका एक राष्ट्रधर्म (राष्ट्र के प्रति कर्तव्य) है, एक समाज धर्म (समाज के प्रति कर्तव्य) है, एक कुल धर्म (पुरखों के प्रति कर्तव्य) भी है। हाँ, उनका एक व्यक्ति धर्म (व्यक्ति के नाते कर्तव्य) भी है। व्यक्ति धर्म के नाते आध्यात्मिक सन्तुष्टि के लिए वह किसी भी मजहब को अपना सकता है। राष्ट्र धर्म, समाज धर्म आदि अपने सभी कर्तव्यों को निर्वहन करते हुए यदि कोई व्यक्ति कहता है कि मैंने कुरान या बाईबल पढ़ी है और मुझे लगता है कि उस पद्धति के द्वारा ठीक से भगवान की प्रार्थना, पूजा कर सकता हूँ तो किसी को भी कोई आपत्ति नहीं होगी।

इस प्रश्न के उत्तर में क्या इस्लाम और ईसाइयत के संदर्भ में आप धार्मिक सहिष्णुता के पक्षधर हैं? गोलवलकर या देवरस का बार-बार यही कहना था कि ये पूजा पद्धतियाँ केवल सहनीय नहीं हैं वरन् आदरणीय भी हैं। संघ भारत को विभिन्न मत मतान्तरों की भूमि बनाना चाहता है, जैसा कि पूर्व काल में भी था। सभी मत समान रूप से सम्माननीय थे, किन्तु सभी का समान राष्ट्रीय दृष्टिकोण था।

कुछ प्रश्नोत्तर

प्रश्न : *आप यह मानकर चलते हैं कि भारतीय ईसाई मूल रूप से हिन्दू ही हैं। किन्तु भारत के मूल निवासी तो द्रविड़ थे। हिन्दू तो भारत में आर्यों के रूप में आए। क्या हिन्दुत्व भी भारत में एक बाहरी मजहब नहीं है? और हिन्दू विदेशी नहीं हैं?*

उत्तर : हाँ, इतिहास में आर्यों के बाहर से आने की एक कहानी अवश्य गढ़ी गई है। विद्वानों ने अपना काफी समय और शक्ति इस सिद्धांत के परीक्षण में खर्च किया है कि कोई तीन-चार हजार साल पहले कहीं बाहर से आर्य लोग भारत में आए।

व्यक्तिगत रूप से मेरा ऐसा मानना है कि यदि कोई आवागमन हुआ है तो वह बाहर से भारत आने का नहीं, बल्कि भारत से बाहर जाने का हुआ है। मैं इस कल्पना को निरस्त करता हूँ, जिसमें कहा गया है कि हिन्दू विदेशी हैं और भारत में केवल आदिवासी रहते थे। इस सिद्धान्त को मानने से सभी विदेशी हिन्दुओं के समान हो जाएँगे। इसलिए इस घृणास्पद सिद्धान्त को बार-बार दोहराया गया। तर्क के लिए (हाँ, केवल तर्क के लिए) यह मान भी लिया जाए कि हिन्दू बाहर से आए हैं तो भी यह तथ्य अपनी जगह है कि हिन्दुत्व का विकास इस देश के इतिहास से जुड़ा हुआ है। इसे अलग नहीं किया जा सकता। सम्पूर्ण इतिहास में हिन्दू इस देश के लिए लड़े, इसकी सुरक्षा की और इस पर बलिदान हो गए। यहीं पर वे एक समाज और महान जाति के नाते पले, बढ़े। अनेक प्रकार के मत मतान्तरों और दर्शन को जन्म दिया, एक उदात्त संस्कृति का विकास किया और इस देश को सुन्दर बनाया। हिन्दू समाज और इस देश का परस्पर पूर्ण तादात्मय है। हम चाहते हैं कि इस पूर्ण तादात्मय को अन्य लोग भी स्वीकार करें। हिन्दुओं के पास भारत के अतिरिक्त अपना कहने के लिए कोई और स्थान नहीं है। और यदि हिन्दू न हो तो इस देश को मातृभूमि मानकर इसके लिए लड़ने और इसकी सुरक्षा के लिए अपने प्राणों को समर्पित करने वाला कोई नहीं है। आपके सामने मैं एक तथ्य प्रस्तुत करता हूँ। स्वतन्त्रता के पश्चात्

सरकार स्वतन्त्रता सेनानियों को ताम्रपत्र देकर सम्मानित करती है। यदि ताम्रपत्र प्राप्त करने का पात्र कोई मुसलमान या ईसाई होता है, तो सरकार का उत्साह कई गुणा बढ़ जाता है, क्योंकि वे ऐसे पात्र को बड़ी उत्सुकता से खोजते रहते हैं। कृपया आप ताम्रपत्र द्वारा सम्मानित होने वाले व्यक्तियों की सूचि देखें और ध्यान करें कि उसमें कितने ईसाई हैं। इस विषय में जितना कम बात की जाए उतना ही अच्छा।

मैं भारतीय ईसाइयों को विदेशी भी नहीं मानता। भारतीय ईसाई शब्द का अर्थ क्या है? इसका विश्लेषण करें तो ध्यान में आता है वह ऐसा हिन्दू है जो स्वयं या उसके दादा-परदादा ईसाई बन गए थे। इस शब्द में भारतीय का अर्थ हिन्दू है। तात्पर्य कि आप मूल रूप से हिन्दू हैं। इसी प्रकार भारतीय मुसलमान कौन है, वह भी हिन्दू ही है, या तो उसने या उसके पुरखों ने इस्लाम कबूल कर लिया था। इस शब्द में भी भारतीय का अर्थ हिन्दू ही है। क्या आपको कभी 'भारतीय हिन्दू' शब्द सुनाई पड़ेगा, कभी भी नहीं। इसका सीधा सा कारण यह है कि सारी दुनिया यही मानती है कि भारतीय का अर्थ हिन्दू है। यदि ऐसा है तो क्या हिन्दू भारत में बहिरागत हो सकता है?

प्रश्न : *मैं संघ के अनुशासन की प्रशंसा करता हूँ, पर थोड़ी सी समस्या है। कोई व्यक्ति किस प्रकार से सोचता है, यह बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि उसे बचपन में किस प्रकार की शिक्षा मिली है और उसका विकास किस माहौल में हुआ है। संघ बचपन में ही लोगों को भर्ती कर लेता है तथा उनका एक विशेष प्रकार का मानस तैयार करता है। उन्हें मुसलमानों, ईसाइयों व अन्य से घृणा करना सिखाया जाता है। वे सीधे तरीके से नहीं सोच सकते, क्योंकि इस घृणा के कारण एक बीमार मानसिकता के शिकार हो जाते हैं।*

उत्तर : मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि आज की वार्ता का विषय है 'भारत में ईसाइयत की प्रासंगिकता'। जहाँ तक इस बात का प्रश्न है कि संघ घृणा का उपदेश देता है, पूर्व संघ प्रमुख गोलवलकर (गुरुजी) व वर्तमान संघ प्रमुख देवरस लगभग 50 वर्षों

से संघ के विषय में बोल रहे हैं तथा इस समय तो प्रचुर मात्रा में संघ साहित्य भी उपलब्ध है, मैं आपको चुनौती देता हूँ कि आप एक भी ऐसा बिन्दु या शब्द मुझे दिखा दें जिससे जीसस क्राइस्ट, बाईबल की शिक्षा, उसके उपदेशों, पैगम्बर मोहम्मद साहब या कुरान, जेरुसलम या मक्का के पवित्र स्थानों की यात्रा के विषय में कोई अपमानजनक टिप्पणी की गई हो। संघ के पास इन बातों, इन मजहबों के खिलाफ कुछ भी नहीं है। इसका सीधा सा कारण भी हमको ध्यान आना चाहिए कि स्वयं हिन्दुत्व में ही अनेक प्रकार के मत पंथों ने जन्म लिया और फले-फूले। किसी भी प्रकार के मजहब, मत, उपासना से संघ का कोई सम्बन्ध नहीं है। किसी भी व्यक्ति या व्यक्ति समूह के प्रति संघ का रुख इस बात से निर्धारित नहीं होता कि उसकी उपासना पद्धति (मजहब) क्या है। इसके लिए दूसरे मापदंड हैं, जिस कसौटी पर संघ का रुख बनता है, ये है: आपका इस देश के प्रति क्या दृष्टिकोण है, इस देश के लोगों के प्रति, यहाँ की एकात्मता के प्रति, देश की स्वतन्त्रता और सम्मान के प्रति तथा इस देश के करोड़ों नागरिकों के प्रति और उनके सुख के प्रति आप कैसा व्यवहार करते हैं, कैसा सोचते हैं? ये वे कसौटी हैं, जिससे आपके प्रति संघ का दृष्टिकोण तय होता है। यदि इस देश को अपनी मातृभूमि की तरह प्यार करते हैं, इस देश के निवासियों को आप अपने भाई की तरह मानते हैं और यदि आपके मन में इस प्रकार की कोई भावना नहीं है कि आप उन पर अपनी इच्छा थोपकर उनके सुखी जीवन में व्यवधान डालें तो स्वतः ही आप हमारे भाई बन जाते हैं, क्योंकि आप ईमानदारी से हमारी माता को अपनी माँ मानते हैं। लेकिन यदि आप भारत को अपना मजहब फैलाने का एक चारागाह मानते हैं तो आपके प्रति हमारी दृष्टि बदल जाती है। यह है संघ का दृष्टिकोण।

प्रश्न : *मैं आपका आभारी हूँ कि आपने अपनी बात बिना लाग लपेट के साफ-साफ कही है। आपने अपनी बातचीत में मेरे अवलोकन की पुष्टि की है। पहली बात जो चर्च ने करनी चाहिए वह यह है कि*

चर्च ने अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए। मैं गोवा से हूँ और मुझे पुर्तगालियों का इतिहास मालूम है। मुझे गोवा के हिन्दू बन्धुओं की चोटिल भावनाओं का पता है। आपने कुछ बातों को स्पष्ट कर दिया, यही बातें मैं भी सोच रहा था। मुझे मालूम है कि एक बड़ा वर्ग चर्च की नीतियों से दु:खी है। इसलिए सबसे पहले चर्च को आत्म स्वीकृति करनी होगी। मैं उनके कालिख भरे इतिहास में नहीं जाना चाहता, किन्तु मैं यह पूछना चाहता हूँ, क्या आपको चर्च से आती कुछ आशा की किरण दिखाई देती है? क्या आपको संवाद द्वारा हिन्दू बन्धुओं से कुछ ऐसे सम्बन्ध बनने की उम्मीद है जो कि भविष्य को उजला कर दे या फिर भविष्य भी इतना ही अन्धकारपूर्ण होगा जितना कि भूतकाल?

उत्तर : मैं गोवा से आए इन मित्र के विचार से अति प्रसन्न हूँ। हम इतने संकुचित मन के नहीं हैं कि हमारे पास आकर कोई क्षमा प्रार्थी हो। हमारी ऐसी कोई इच्छा नहीं है। बस वे इस मातृभूमि को अपनी माँ मानें और इसी रूप में उससे प्यार करें। ऐसा करने से ईसाइयों से हमारी सभी समस्याओं का स्वत: समाधान हो जाएगा। यह केवल अपनी मानसिकता को बदलने का मामला है। हमारे लोगों ने मन्दिर बनाए हैं, इनको अपवित्र न करें, हमारे अपने धर्म ग्रन्थ हैं, उनका मजाक न उड़ाएँ। हमारे श्रद्धा के बिन्दु हैं, उनका आप भी सम्मान करें। इस देश की विरासत को, परम्परा को समृद्ध करने वाले अनेक नरपुँगव हो गए, उन्हें अपना ही मानें। आप जानते ही हैं कि यद्यपि आर्य समाजी मूर्ति की पूजा नहीं करता पर उसे अपवित्र भी नहीं करता, इसी कारण वह अन्यों का सहोदर है। ईश्वर विषयक अपने विचार कभी भी दूसरों पर न थोपें।

ईसाइयों का एक छोटा सा वर्ग है, जो स्वयं को राष्ट्रवादी चर्च कहता है। भारतीय ईसाइयों का यह पहला साहसी वर्ग है, जिसने स्वयं को चर्च की रूढ़ियों से मुक्त कर लिया है और स्वयं को राष्ट्रीय दृष्टिकोण से संगठित करने में लगे हैं। संख्या में ये बन्धु कम हैं। इन्हें खड़ा होने में समय लगेगा। मेरी इच्छा है इनका विकास हो और मुझे लगता है समय के साथ इनका विकास होगा ही। मैं यह विश्वास करना चाहता हूँ कि भारतीय ईसाई मूलत: भारतीय है। वह

इसी मिट्टी का बना है और उसने यहीं का नमक खाया है। उसने भले ही अपनी पूजा पद्धति बदल ली हो, पर उसके पूर्वज तो वही हैं। वह अपना खून नहीं बदल सकता। देश प्रेम इतनी जल्दी तिरोहित नहीं किया जा सकता। उनकी जातीय भावना और देश प्रेम एक दिन अवश्य अन्य सभी बातों को समाप्त कर देगा।

प्रश्न : *आपके द्वारा प्रस्तुत विषय सुनकर प्रसन्नता हुई। वेद पर विश्वास करने वाले और वेदों पर विश्वास न करने वाले, मूर्ति पूजा करने वाले और मूर्ति पूजा नहीं करने वाले सभी हिन्दू हैं। वास्तव में आपने बहुत अच्छा प्रतिपादन किया है। किन्तु मेरे मस्तिष्क में एक प्रश्न उभर कर आता है कि यदि मैं आपको ईसाई समझूँ तो क्या मैं गलत हूँ? क्योंकि जिस प्रकार से आपने भारत के लोगों की आकांक्षा का वर्णन किया, जिस प्रकार से आपने स्वयं को भारत के इतिहास से एकरूप माना, मैं सोचता हूँ, आप पूरी तरह ईसाई हैं। मैं सोचता हूँ कि आप मेरे विचार पर आपत्ति नहीं करेंगे।*

उत्तर : मैं ठीक से नहीं समझ सका कि आपका प्रश्न वास्तव में क्या है? ईसाई होने का अर्थ एक विशेष प्रकार की पूजा पद्धति का अनुशरण करना होता है। मैं आपको बताता रहा हूँ कि हिन्दू किसी एक विशेष पूजा पद्धति का नाम नहीं है। हिन्दू एक राष्ट्रीयता का नाम है। आप एक विशेष पूजा पद्धति के अनुशरण की बात कर रहे हैं। मैं समाज, राष्ट्र और आम जनता की बात कर रहा हूँ। मैं भगवान की पूजा पद्धति या धर्म ग्रन्थ के विषय में बात नहीं कर रहा। मैं हिन्दू शब्द में निहितार्थ भाव की बात कर रहा हूँ, न कि वैश्विक संदर्भ में कुछ कह रहा हूँ। मेरी बात देश, राष्ट्र, उनकी सुख समृद्धि व उनके मस्तिष्क के विषय में है न कि चर्च, विशेषकर गिरिजाघर या पादरी, बाइबल या किसी धर्मोपदेश के विषय में। मेरा इन सबसे कोई सरोकार नहीं है।

प्रश्न : *मैं प्रसन्न हूँ कि भारतीय हूँ, मैं ईसाई भी हूँ और मैं अपने देश से प्यार करता हूँ। क्या आप स्पष्ट कर सकते हैं कि मेरे ईसाई मजहब से मेरे देशप्रेम पर क्या और किस प्रकार प्रभाव पड़ता है?*

उत्तर : अपनी स्थिति स्पष्ट करने के लिए मैं वो बातें फिर

दोहराऊँगा, जो पहले ही कह चुका हूँ। जैसा कि ये सज्जन कह रहे हैं और मैं भी इनके कथन पर विश्वास करता हूँ कि वह अपने देश से प्यार करते हैं और इनके लिए राष्ट्रहित ही अन्य सभी बातों से बढ़कर है, तो मैं भगवान से प्रार्थना करूँगा कि इस प्रकार के लोगों की संख्या कई गुणा बढ़े। लेकिन चर्च की गतिविधियों के विषय में क्या कहा जाए? मतान्तरण, विशेष रूप से हरिजनों का मतान्तरण, नागालैंड की समस्या, फिजो और माइकल स्टॉक, भारतीय सेना के साथ युद्ध कर रहे मिजो विद्रोही, ये सभी प्रश्न हमारे सामने हैं। यदि इन सभी विषयों का सम्बन्ध ईसाई प्रचार से नहीं है तो कोई समस्या नहीं है। लेकिन तथ्य क्या कहते हैं? क्या आप उन्हें नकारने के लिए तैयार हैं? मुझे किसी भी ईसाई केन्द्र से इसके नकारने की जानकारी नहीं है। यदि मुझे तथ्यों की सही जानकारी नहीं है तो मैं स्वयं को सुधारने के लिए तैयार हूँ। मैं अपने वक्तव्य को वापस ले लूँगा। मैंने कुछ बातें आपके सामने रखी हैं, मैंने उनकी व्याख्या भी की है, यदि समय है तो मैं पुनः उनकी व्याख्या कर सकता हूँ। यदि मैं गलत हूँ तो मैं बहुत प्रसन्न होऊँगा और मैं सुधार करने के लिए तत्पर हूँ।

प्रश्न : *मैंने बहुत विचार किया और मुझे लगता है कि मैं हिन्दू ईसाई हूँ। पहले कुछ भी रहा हो पर आज मैं जो भी हिन्दुत्व में है, उससे एकात्म होना चाहता हूँ। मैं केवल अपनी बात कर रहा हूँ? मैं जानना चाहता हूँ कि क्या हिन्दू ईसाई के नाते मैं संघ में स्वीकार्य हूँ। मैं राष्ट्रवादी हूँ, पर क्या संघ मुझे स्वीकार करने के लिए तैयार है? पर मेरी एक शर्त है, एक ईसाई पादरी होने के नाते मुझे अपने ईसाई मत (Faith) का पालन करने की अनुमति होनी चाहिए और मुझे अपने विचार दूसरों तक पहुँचाने की सुविधा भी।*

उत्तर : मैं आपके प्रश्न के दूसरे हिस्से का उत्तर पहले देना चाहूँगा और पहले हिस्से का बाद में। अभी भी हमारे यहाँ कई चर्च जाने वाले संघ के सदस्य हैं। वे संघ द्वारा हाथ में लिए अनेक सामाजिक व राष्ट्रीय कार्यों में भाग लेते हैं। वे ईसाई हिन्दू हैं अर्थात् जीसस को मानने वाले हिन्दू। वे बाईबल पढ़ते हैं, क्रिसमस का त्यौहार मनाते हैं, रविवार को चर्च जाते हैं और वहाँ के धर्मोपदेश

सुनते हैं। उनके घरों में होने वाले जन्म और विवाह आदि प्रसंगों पर ईसाई पादरी आकर सभी कर्मकांड पूरा करवाते हैं और उन्हें आशीर्वाद देते हैं। वे उतने ही अच्छे ईसाई हैं जितने कि आप में से कोई भी। पर वे संघ के कार्यक्रमों में भाग लेते हैं, संघ में आने वाले अन्य हिन्दुओं के समान ही उन्होंने राष्ट्रहित को अपने जीवन में सर्वोपरि स्थान दिया है, अन्य सभी बातों को उन्होंने गौण स्थान पर रखा है, यदि ये सज्जन संघ के शेष स्वयंसेवकों की तरह ही स्वयं को प्रस्तुत करते हैं, तो इनका स्वागत है। जैसा कि पहले भी उल्लेख किया गया है कि एक भूतकाल भी है और आप जानते हैं कि भूत सदा मस्तिष्क को परेशान किया करता है। अतः हमें सामन्जस्य बैठाने की किसी प्रक्रिया को खोजना होगा। प्रारम्भ में हमें यह सोचना होगा कि क्या यह भूतकाल अपने लिए गौरव का विषय हो सकता है? हम लोग लालच, भय और धोखाधड़ी से किए गए मतान्तरण को याद करें। हम उन अत्याचारों को याद करें जो मतान्तरण के लिए किए गए। यह एक खौफनाक आख्यान हैं। क्या करना ठीक होगा? क्या ये बुद्धिमानी होगी कि हम इस प्रकार के विस्फोटक भूतकाल को वर्तमान से जोड़ें, इससे तो हमारा भविष्य भी खराब हो जाएगा। इसका उत्तर तथ्यों की अनदेखी करना या उनकी उपेक्षा करना नहीं हो सकता। क्या हम भूतकाल की उन दुखद घटनाओं को न्याय संगत ठहरा सकते हैं? इसका एक अच्छा रास्ता भी है, जिसकी मैं उदाहरण सहित व्याख्या करूँगा।

यह उदाहरण इंग्लैंड के इतिहास का है। एक रानी थी मेरी टूडर (Mary Tudor), वह कैथोलिक थी। उसके पिता और भाई जो पहले राज करते थे वे दोनों रोम के पोप और कैथोलिक चर्च के विरोधी थे। जब वह शासनारूढ़ हुई तो वह अपने पूर्ववर्ती शासकों के विपरीत इस बात के लिए उत्सुक हुई कि पोप की सर्वोच्चता तथा कैथोलिकों की प्रभुता इंग्लैंड में कैसे कायम की जाए। वह इसमें संतुलन नहीं बना सकी और आवश्यकता से अधिक सक्रिय हो गई। उसने धार्मिक कारणों से खंभे से बाँध कर जिन्दा जला देने की क्रूर प्रथा को पुनर्जीवित किया। अभी तक यह प्रथा स्पेन में

प्रचलित थी। इस वीभत्स प्रथा को इंग्लैंड में भी लाते समय वह सोच रही थी कि वह रोमन कैथोलिकों का हित साध रही है। यह इंग्लैंड के इतिहास का एक काला अध्याय है। आज भी इंग्लैंड में अनेक रोमन कैथोलिक रहते हैं, किन्तु उनमें से एक भी व्यक्ति मेरी द्वारा किए गए कार्यों से अपने को नहीं जोड़ता। मानसिक स्तर पर भी कोई उस घटना से या रानी से अपना सम्बन्ध नहीं बनाता। यदि ऐसा नहीं होता तो आज इंग्लैंड की एकात्मता निर्माण होना असंभव था। अतः उन्होंने इससे अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया और सम्बन्ध विच्छेद होने पर उन्हें उस घटना पर शर्मिन्दा होने की भी आवश्यकता नहीं है।

ईसाइयत के नाम पर किए गए आपराधिक कार्यों से आप क्यों स्वयं को जोड़ते हैं? इस वीभत्स भूतकाल को छोड़ें। वरना आप मानसिक स्तर पर हिन्दुओं के साथ कैसे जुड़ाव अनुभव करेंगे? भारतीय इतिहास में बहुत सी बातें हैं, जिन पर आप गर्व कर सकते हैं, इससे जुड़कर आप गौरवान्वित महसूस करें। यह आपकी विरासत है, यह वह विरासत है जिसे आपके पुरखों ने समृद्ध किया है, जिनका रक्त तुम्हारी धमनियों में आज भी प्रवाहित हो रहा है। इसे स्वीकार करें।

प्रश्न : *मैं संघ का व्यक्ति हूं। आपको उन ईसाईयों की संख्या अवश्य पता होनी चाहिए जो भारत से बाहर चले गए हैं। इसकी तुलना मुसलमानों और हिन्दुओं की उस संख्या से करनी चाहिए जो बाहर चले गए।*

उत्तर : मेरे पास अभी इस विषय में आंकड़े नहीं हैं। मैं इस बात के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ कि मैं ये आंकड़े आपको बताने में असमर्थ हूँ। इस विषय में मैं कोई अनुमान भी नहीं लगाना चाहता।

प्रश्न : *आपने देश भक्ति के जो भाव हमारे मस्तिष्क में भरे हैं और चर्च के दूसरे पहलू के विषय में जो जानकारी हमारे सम्मुख रखी है, मैं उसके लिए आपका आभारी हूँ। किन्तु मैं तमिलनाडू से हूँ और आपने जो हिन्दू की व्याख्या की है, मैं उससे सहमत नहीं हो सकता। ई.वी. रामास्वामी, जो स्वयं एक हिन्दू थे, उन्होंने यह घोषणा तक कर डाली कि भारत में हिन्दुत्व है ही नहीं, यहाँ केवल*

भारतीयता है। छोटे से हिन्दुत्व को ब्राह्मणों ने भारतीयता बना दिया है। और हिन्दुत्व के नाम पर आपने भारतीयों का शोषण किया है। ऐसा कहना है ई.वी. रामास्वामी का। यह प्रचार इतना प्रभावी हुआ कि तमिलनाडू में अभी भी ब्राह्मणों ने अपना वर्चस्व बना रखा है। यह तमिलनाडू में ब्राह्मणों के कांग्रेस पार्टी पर प्रभुत्व से भी प्रमाणित होता है। हिन्दुत्व के नाम पर बहुतांश में भारतीयों का, हरिजनों का और अन्य निम्न वर्गों के लोगों का शोषण किया जा रहा है। भारत में कोई हिन्दुत्व नहीं है, केवल भारतीयता है।

आपने हिन्दुओं को बहुत सहिष्णु बताया है। मैं अपने अनुभव से इससे सहमत नहीं हो सकता हूँ। कन्याकुमारी जिले में हिन्दुओं विशेषकर संघ के लोगों ने दीवारों पर और पोस्टर में क्या लिखा है, यह आप देख सकते हैं। उन्होंने न केवल पादरियों को बल्कि हमारी गहरी आस्था, जीसस और यहाँ तक कि हमारी देवी को भी गाली दी है।

यह केवल पाँच महीने पहले की बात है कि हिन्दुओं ने बिना किसी उकसावे के चर्चों पर हमला कर दिया। लोगों को गोली से उड़ा दिया। मैं उस परिवार से हूँ जहाँ संघ के सदस्य भी हैं। गत वर्ष तक विवाह व अन्य उत्सव सामूहिक रूप से मनाए जाते थे। यदि सहिष्णुता होती तो ऐसे परिवारों में शत्रुता कैसे पैदा की जा सकती है? उस जिले में मुसलमान और हिन्दू एक साथ काम कर रहे हैं। यदि हिन्दू सहिष्णु होते तो यह घृणा निर्माण नहीं होती। मैंने इस बात का स्वयं अनुभव किया है। मैं आपकी प्रतिक्रिया जानना चाहता हूँ।

उत्तर : कुछ लोगों के लिए यह भ्रम सुखद है कि भारत में कोई हिन्दुत्व आदि नहीं है, क्योंकि पेरियार रामास्वामी ने यह या वह कहा है। मैं स्वयं भी दक्षिण भारत का हूँ और मुझे इन लोगों और इनके प्रचार की भी जानकारी है। मैं यहाँ से प्रारम्भ करता हूँ। हिन्दू समाज की अपनी समस्याएँ हैं, जैसे छूआछात व ऐसी ही कुछ अन्य। निश्चित रूप से ये हमारे हिन्दू समाज पर कलँक है। हिन्दू समाज सुधारक और हिन्दू संगठन इन बुराईयों को दूर करने के लिए भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। पर यह हमारा आन्तरिक मामला है। उदाहरण के लिए छूआछात सवर्ण हिन्दुओं के मन में बसता है। यदि

यह हट जाए तो समस्या का समाधान हो जाएगा। पर यह दलितों को मतान्तरित करने से नहीं होगा। इन बुराईयों और बीमारियों को कोई भी न्यायोचित नहीं ठहरा रहा। संघ का जन्म ही हिन्दुओं में व्याप्त बुराईयों के कारण हुआ है। इस सम्बन्ध में हिन्दू समाज को किसी प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं है। यह हमारे समाज का मामला है और वे सभी हमारे अपने बन्धु हैं।

मैं अब ब्राह्मणों के प्रभुत्व और उनके शोषण के विषय पर आता हूँ। यह एक आश्चर्यजनक खोज है और यदि मेरे हाथ में होता तो मैं इस अनुसंधान के लिए पुरस्कार प्रदान करता। भारत में ब्राह्मणों का प्रतिशत कितना है? भारत के किसी भी गाँव में देखिए, वहाँ ब्राह्मण कौन है? एक स्कूल का अध्यापक या पोस्टमास्टर। क्या ये लोग देश के अन्य लोगों के लिए भारी खतरा हैं? हिन्दू समाज में ई.वी. रामास्वामी नायकर और इस प्रकार के अन्य लोग भी हैं, जो राम और कृष्ण को भी गाली दे सकते हैं। यह हिन्दू परम्परा पर कैथोलिक प्रभाव है। पर क्या आप भ्रम में ही जीना चाहते हैं?

आप तमिलनाडू के किसी गाँव में चले जाएँ। कम्ब रचित तमिल रामायण का पाठ और श्रवण उसी श्रद्धा से होता है, जैसा कि विभिन्न भाषाओं में और अन्य प्रान्तों में होता है। तमिलनाडू का आम ग्रामीण भी राम और कृष्ण की गाथाओं में समान रूप से हर्षित और विशादग्रस्त होता है। मैं समान अनुभूति का यही एकमात्र उदाहरण दे रहा हूँ। यह समान अनुभूति ही किसी समाज या राष्ट्र की एकता का आधार बनते हैं न कि वे बातें जो रामास्वामी मंचों से कहते हैं। हाँ, यह भी सच है कि रामास्वामी अपने तरीके से हिन्दू समाज में सुधार लाना चाहते थे।

जहाँ तक तमिलनाडू के झगड़ों की बात है, हिन्दू जब तक चुप है, शान्त है या सब कुछ सह लेता है तो वह अच्छा है। जिस क्षण अत्याचार का विरोध करता या प्रतिकार करता है, क्योंकि एक समय ऐसा आता है जब प्रतिक्रिया आवश्यक हो जाती है, तो वह राक्षस और शैतान बन जाता है। विवेकानन्द स्मारक शिला (कन्याकुमारी) में जिस प्रकार से ईसाइयों ने झगड़े की शुरुआत की तो उसकी प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक था। ईसाइयों ने निलक्कल में क्या किया,

हिन्दुओं ने तो बाद में केवल उनका विरोध ही किया है।

संघ ने घृणा के एक भी शब्द को न्यायोचित नहीं ठहराया, यदि वह किसी व्यक्ति के ईसाई होने मात्र से कहा गया है। संघ इस प्रकार के साहित्य और इसके लेखकों से कोई सम्बन्ध नहीं रखता है। मैं यह नहीं चाहता कि आप कन्याकुमारी के ईसाइयों को मासूम मेमने की तरह मानने की भूल करें। निश्चित ही वे वैसे नहीं हैं।

प्रश्न : *मैं एक स्पष्टीकरण चाहता हूँ। आपका कहना है कि पादरी या बिशप के आदेशानुसार वोट न दें, बल्कि अपने विचार से दें। इसका कोई प्रमाण नहीं है कि पादरी या बिशप हमें एक खास तरीके से वोट देने के लिए कहते हैं। वे हमारे आध्यात्मिक विकास के लिए हैं।*

उत्तर : मुझे अतीव हर्ष होगा यदि आपका कथन सत्य है। मैं चाहता हूँ कि ऐसी ही स्थिति होनी चाहिए। राजनीतिक व्यवहार राजनीतिक विषयों पर ही निर्भर होना चाहिए।

यदि कोई एक मजहबी समुदाय किसी विशेष प्रकार से राजनीतिक व्यवहार करता है तो अस्वस्थता का प्रतीक है। वास्तव में यही देश विभाजन का कारण भी बना। यदि आप सुनिश्चित हैं कि किसे वोट करना चाहिए और किसे नहीं करना चाहिए, इस बारे में कोई हिदायत नहीं दी जाती और न ही कोई कानाफूसी आध्यात्मिक क्षेत्रों से चलती है तो मैं सबसे अधिक उल्लसित हूँगा।

प्रश्न : *मैं नागा ईसाई हूँ। मैं आपकी इस बात से सहमत हूँ कि जब एक नागा शिलाँग जाता है तो वह कहता है कि मैं भारत जा रहा हूँ। नागा लोग इसी तरह बोलते हैं। लेकिन मैं आपकी इस बात से असहमत हूँ कि ये ईसाइयत के कारण है। इसके अलग कारण हैं।*

मैं पहली बार जब अपने मित्र के साथ यहाँ आया और हम लोग पुणे के पास रामवाड़ी में गए तो हमें रोक लिया गया। हम पर चीनी जासूस होने का आरोप जड़ दिया गया। नागा अब भी बाहर जा रहे हैं। हमें लगता है कि हमारी संस्कृति और जातीय नाक-नक्श यहाँ के लोगों से एकदम भिन्न हैं। मेरी इच्छा नागाओं के अज्ञान की

तुलना शिक्षित भारतीयों से भी करने की होती है।

उत्तर : संघ के व्यक्ति के नाते मैं प्रत्येक नागा को अपना भाई मानता हूँ। वे यहाँ की मिट्टी की संतान हैं। मैं उन ईसाई धार्मिक गतिविधियों की बात कर रहा था, जिनके कारण नागा विद्रोह पनपा। मैं इसको संक्षिप्त करता हूँ। यह जानें कि पंडित जवाहर लाल नेहरू ने इस विषय में संसद में क्या कहा था। यदि आप कहते हैं कि मैं गलत हूँ, तो मैं स्वयं को भी नेहरू की तरह अज्ञानी मानने के लिए तैयार हूँ।

प्रश्न : *मैं केरल से हूँ और मेरे माता-पिता सोचते हैं कि वे बहुत दीर्घकाल से ईसाई हैं। हम अपने प्रान्त की हिन्दू परम्परा से पूरी तरह एकरूप हैं। आपने बताया कि हमें देश से कैसे प्यार करना चाहिए। हमने अपने लोगों को हानि पहुँचाकर भी अपने देश का बहुत भला किया है। हम भारतीय विरासत पर इतना ही गौरव अनुभव करते हैं, जितना कि आप। देशभक्ति पर एकाधिकार जताना उद्दंडता माना जाएगा। अपनी मातृभूमि को कैसे प्यार करें, क्या आपके पास इसका कोई खास नुस्खा (विशेष पद्धति) है। हम इतिहास से, परम्परा से और अपने योगदान से उतने ही भारतीय हैं जितना कोई और। यह सुनकर आघात लगता है कि देश की समस्याओं को हल करने का सही फार्मूला केवल आपके पास है।*

उत्तर : मैं पहले भी इस पहलू पर बोल चुका हूँ। ईसाइयत या किसी अन्य मत का होने के कारण कोई भी संघ का जिम्मेदार व्यक्ति किसी के प्रति जरा सी भी दुर्भावना नहीं रखता। मैंने भारत के सामान्य ईसाइयों के विषय में बात की है, उनके संक्षिप्त इतिहास को आपके सामने रखा है और मैंने उसी आधार पर हिन्दुओं के कष्टों, शिकायतों का उल्लेख किया है। मैं पुन: कहता हूँ एक अच्छा देशभक्त नागरिक तकलीफ देने वाली गतिविधियाँ नहीं करता। ये सज्जन जो केरल के एक विशेष क्षेत्र के हैं देश की परम्परा से जुड़े हैं और निम्न स्तर के कार्य नहीं करते हैं, तो मैं स्पष्ट करना चाहूँगा कि ये भी उतने ही अच्छे देशभक्त हैं जितना कोई अन्य देशभक्त हिन्दू।

●●●

स्वयंसेवक सक्रिय हैं
ऐसे संगठन एवं उनके क्षेत्र

	संगठन	क्षेत्र
1.	अधिवक्ता परिषद	अधिवक्ता, न्याय क्षेत्र
2.	आरोग्य भारती	स्वास्थ्य
3.	कुटुंब प्रबोधन	पारिवारिक संस्कार एवं समन्वय
4.	कुष्ठ रोग निवारण समिति	कुष्ठ रोगी
5.	क्रीड़ा भारती	खेल जगत
6.	गौ संवर्धन	गौ रक्षण एवं संवर्धन
7.	ग्राम विकास	समग्र ग्राम विकास
8.	ग्राहक पंचायत	ग्राहक
9.	दीनदयाल शोध संस्थान	सर्वांगीण ग्राम विकास
10.	नेशनल मेडिकोज ऑर्गेनाइजेशन	डॉक्टर्स
11.	पूर्व सैनिक सेवा परिषद्	पूर्व सैनिक
12.	प्रज्ञा प्रवाह	बौद्धिक
13.	बालगोकुलम्	बालक-बालिका विकास
14.	भारत विकास परिषद्	सेवा
15.	भारतीय इतिहास संकलन योजना	इतिहास
16.	भारतीय किसान संघ	किसान, कृषि
17.	भारतीय जनता पार्टी	राजनैतिक
18.	भारतीय मजदूर संघ	मजदूर

19.	भारतीय शिक्षण मंडल	शिक्षाविद्
20.	राष्ट्र सेविका समिति	महिला
21.	राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ	शिक्षक
22.	लघु उद्योग भारती	लघु उद्योग
23.	सहकार भारती	सहकारी क्षेत्र
24.	सामाजिक समरसता	सामाजिक समन्वय
25.	साहित्य परिषद्	साहित्यिक
26.	सेवा भारती	सेवा
27.	सीमा जनकल्याण समिति	सीमावर्ती जन विकास
28.	संस्कार भारती	कला, कलाकार
29.	संस्कृत भारती	संस्कृत प्रसार
30.	स्वदेशी जागरण मंच	विकास, आर्थिक
31.	वनवासी कल्याण आश्रम	जनजाति विकास
32.	विद्या भारती	शिक्षा
33.	अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्	छात्र
34.	विश्व हिन्दू परिषद्	धार्मिक
35.	विज्ञान भारती	विज्ञान, वैज्ञानिक
36.	सक्षम	दिव्याँग

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सम्बंधित वेबसाईट

Website — www.rss.org
www.vskbharat.com
www.bookbharati.com

Facebook Page : www.facebook.com/swayamsevaks
Twitter : twitter.com/RSSorg
Youtube : www.youtube.com/user/RSSOrg
Instagram : rssorg_official
Koo : @RSSOrg

विमर्श प्रकाशन
नई दिल्ली

ISBN : 978-81-930892-2-4

₹ 40.00